।। श्री हरिः ।।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कुंभनदास

सूरदास

परमानंददास

गोविन्दस्वामी

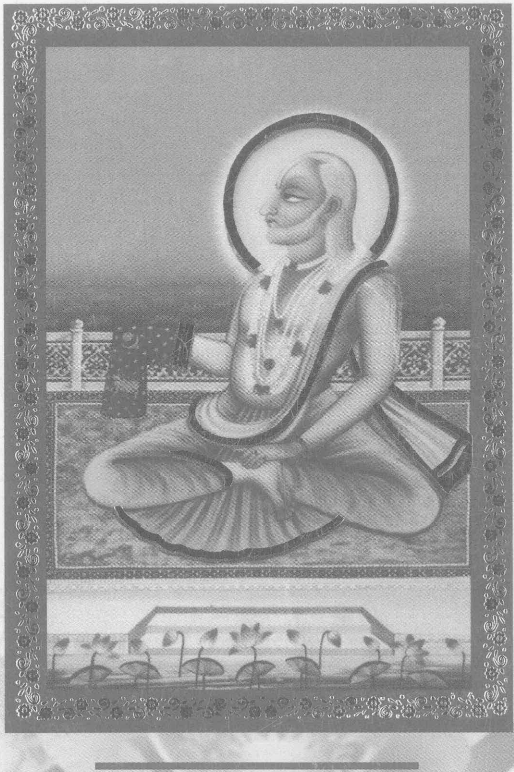

कृष्णदास

छीतस्वामी

चतुर्भुजदास

नंददास

कीर्तन प्रवेशिका

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्य क्रम. नं. १

।। श्री हरिः ।।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

प. पू. गो. श्री निकुंजलता बेटीजीकी प्रेरणासे एवं आपके ही मनोरथ स्वरुप ''श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट'' की स्थापना कई सालों पहले मुंबईमें की गई ।

ट्रस्टका प्रमुख उद्देश्य वैष्णवोंसे लेकर सभी जरुरतमंदो को किसीभी प्रकारका भेदभाव रखे बिना तबीबी इलाज शस्त्रक्रीया, दवाईयां इत्यादिमें यथाशक्य मदद करना है । जिसमें हृदयशस्त्रक्रीया हो या सारवार हो, केन्सर या किडनी डायालिसिस या अन्य रोगोंमें यह ट्रस्ट काफी मदद रुप हो रहा है । ''कुसुमबेन रसिकलाल एवं रसिकलाल मणीलाल लाकडावाला मेडीकल फंड'' के जरीये औषधोपचार इत्यादिमें मदद की जाती है ।

मुम्बई स्थित भाटीया होस्पीटलमें ट्रस्टकी और से ''प्रवीणचन्द्र लल्लुभाई कचरिया मेडिकल बेड ''नामसे बेड रखी गई है । मेडीकल सहायके सिवा जरुरतमंद विद्यार्थीओंको स्कूल, कोलेज, फीस, पुस्तकें, नोटबुक इत्यादिमें भी सहाय की जाती है । ट्रस्टके माध्यमसे गरीबोंको अन्नभी वितरण होता है । दुष्काल, चक्रवात, पूर पीडितों एवं धरती कंप इत्यादि प्राकृतिक आपत्तियोंमेभी ट्रस्ट द्वारा राहत कार्य होता है ।

यह ट्रस्ट जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजीके दिव्य सिद्धान्तों के आधार पर भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृतिका प्रचार प्रसार कर जन समाजका आध्यात्मिक उत्थान करनेके लिये कई प्रकारकी प्रवृत्तियाँ कर रहा है । जिसमें आचार्यचरण श्री महाप्रभुजी, प्रभुचरणश्री गुसांईजी एवं अन्य महानुभावोके जन्मोत्सव पर विशाल कार्यक्रमोंका आयोजन करना, पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजीका एवं अन्य श्री वल्लभकुलके महानुभावोंके वचनामृत एवं विद्वानोंके प्रवचन रखना; भगवत्सेवा शिबिर, संस्कार शिबिर, कीर्तन शिबिर एवं संमेलन रखना इत्यादि का समावेश होता है ।

पू.पा.गो श्री निकुंजलता बेटीजी संस्थापित ''बृहद् मुंबई बैष्णव महीला समाज'' के सहयोगसे समस्त मुंबईमे कीर्तन वर्ग चल रहे हैं । जिसमे सी.पी.टेन्क, वालकेश्वर, वोर्डन रोड, पेडर रोड, तारदेव, माटुंगा, पार्ला, अंधेरी, कांदीवली, बोरीवली, दहींसर इत्यादी उपनगरोंमें कीर्तन वर्ग चल रहे हैं । ट्रस्ट द्वारा पुष्टिभक्तिसंगीत प्रशिक्षणका पंचवर्षीय पाठ्यक्रम तैयार किया गया है । जिसमें प्रवेशिका, प्रबोध, सुबोध, प्रवीण एवं विशारद कीर्तन प्रशिक्षण का समावेश होता है । प्रतिवर्ष ट्रस्ट द्वारा परीक्षामें बैठनेवाले विद्यार्थीओंको प्रथम प्रवेशिका से लेकर विशारद तकमें उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थीओंको सुन्दर सर्टीफिकेट दिया जाता है । उपनगरों सहित पुरे मुंबईसे विद्यार्थी परीक्षा देते हैं । इतना हि नहीं भारत के अन्य शहरोंसे लेकर विदेशोसे में भी ट्रस्ट द्वारा गायन, वादन और नृत्यकी परीक्षाभी ली जाती है ।

ट्रस्टके मेनेजींग ट्रस्टी श्री सुरेन्द्रभाई महेता और मानद् सेक्रेटरी श्री बालकृष्णभाई पोपावाला हैं, जो सुचारु रुपसे कार्य संचालन कर रहे है ।

पुष्टि साहित्य पुस्तकालय
કાંદિવલી (વેસ્ટ)
C/o. સુરેન્દ્ર જમનાદાસ શાહ
M : 9833272383,
9320787642

श्री गुसांईजी [illegible]

कीर्तन प्रवेशिका

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्यक्रम नं. १

✻ मार्गदर्शक ✻

पूज्यपाद गो. श्री निकुंजलताबेटीजी महोदया

✻ कीर्तनकार ✻

श्री. जमनाप्रसादजी शर्मा

✻ संकलन ✻

कु. ख्याति नि. द्वारकादास

✻ उद्घोषक ✻

श्रीमती कल्पनाबेन शाह

✻ प्रकाशक ✻

श्री. गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

✻ मुद्रक ✻

क्रीष्णा प्रींटवेल

धर्मेश शाह
संजय शाह

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठसंख्या
१.	पूज्यपाद गोस्वामी आचार्यवर्योंके आशिर्वचन	-
२.	जो सुख होत गोपाल गाये - पूज्यपाद श्री निकुंजलताबेटीजी	१
३.	संगीत विषयक जानकारी	४
४.	स्वर लेखन पद्धती	८
५.	स्वर अभ्यास	९
६.	ताल विभाग	१०
७.	हमारी कीर्तन प्रणाली	१२
८.	श्री वल्लभाचार्यचरण निर्दिष्टा पुष्टिभक्ति - सेवा साधनामें कीर्तनगानकी उपयोगिता	१५
९.	१) राग विभाग	२०
	अ) राग भैरव	२०
	१. भोर ही श्री वल्लभ वल्लभ कहिये	२१
	२. श्री गोकुलगामको पेंडो ही न्यारो	२६
	३. श्री यमुनाजी तिहारो दरस मोही भावे.	२६
	४. लालन जागो हो भोर भयो	२८
	५. मान लाग्यो गिरिधर गावे	२८
	६. गाउ श्री वल्लभ ध्याउं श्री वल्लभ	३०

क्रमांक	विषय	पृष्ठसंख्या
ब)	**राग रामकली**	३१
१.	जागो मेरे लाल जगत उजियारे	३२
२.	मुरली कौ मन हरिसों मान्यो	३३
३.	पिय संग संग भरि करि कलोलें	३३
४.	गोकुलचंद पालने झूलत	३७
५.	मोहन देहो वसन हमारे	३७
६.	नंदको लाल व्रज पालने झूले	३८
क)	**राग विभास**	४०
१.	मंगल आरती गोपालकी माईरी	४१
२.	आयो आयो आनंद रंग रंग	४३
३.	गोविंद मांगत है दधि रोटी	४३
४.	जे जन गंगा गंगा कहे	४५
५.	ढीले ढीले पग धरत	४५
६.	प्रात समे नव कुंज द्वार व्है	४८
ड)	**राग बिलावल**	४९
१.	लटपटी पागके पेंच सम्हारो	५०
२.	नंदभुवनको भूषण माई	५१
३.	आज और काल्ह और	५१
४.	आगे आगे भाज्यो जात भगीरथको रथ	५४
५.	यह मांगो गोपीजन वल्लभ	५४
६.	आये देव विमानन चढ़ चढ़	५६

क्रमांक	विषय	पृष्ठसंख्या
	इ) राग मालव	५७
	१. नृत्यत लाल गोपाल रासमें	५८
	२. झुलत गोकुलचंद हिंडोरे	६०
	३. रास विलास गहे कर पल्लव	६०
	४. जय जय लाल गोवर्धनधारी इन्द्रभान भंगकीनो	६२
	५. पद्म धर्यो जनताप निवारन	६३
	६. चंद गोविंद गोपी तारागण	६५
	ई) राग आसावरी	६७
	१. ग्वालिन कृष्ण दरससों अटकी	६७
	२. तुमारे भागि सुनो मेरी गोपी	६९
	३. प्रीत बंधी श्री वल्लभ पदसों	६९
	४. प्रिय नवनीत पालने झुले	७२
	५. मैया मोहे ऐसी दुलहनी भावे	७२
	६. मेरो माई हरि नागरसों नेह	७४
१०.	श्रीमद् वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजी	७६

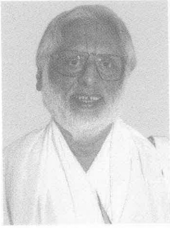

गोस्वामी श्याम मनोहर

॥श्रीहरिः॥

पुष्टि भक्ति संगीत अष्टसखान (प्रचलित) की पुस्तिका प्रकाशित होने जा रही है यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई.

प्रत्येक पुष्टिमार्गीय वैष्णव के घर में विराजमान भगवत्स्वरूप की सेवा को श्रीकृष्ण की व्रजलीला-की भाव-भावना से भरपूर बनाना हो तो एक सुगम उपाय हमारे प्राचीन भक्त कवियों की वाणी-पदों का गान है.

मुझे आशा है कि इस प्रकाशन से सभी भगवत्सेवा रसिकों की भगवत्सेवा कीर्तनभक्ति का बल पायेगी और वह पुष्टिमार्ग की रसमयी सेवा है इसकी श्री शोभा रहेगी.

गो. श्या. म.

६३, स्वस्तिक सोसायटी, चौथा रस्ता, जुहू स्कीम,
बम्बई ४०० ०५६. फोन: ६१४४३२६
"अडेल"
महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य मार्ग, नयाशहर, किशनगढ, ३०५८०२

॥ श्री श्याममनोहरनवनीतप्रियगोवर्धनधरसहस्वामिनीमदनमोहन प्रभवः विजयन्ते ॥
सौंदर्यं निजहृदगतं प्रकटितं स्त्रीगूढभावात्मकं । पुंरुपंच पुनस्तदन्तरगतं प्रावीविशत् स्वप्रिये ॥
संश्लिष्टावुभर्योबभौ रसमयः कृष्णोहियत्साक्षिकं । रूपं तत्त्रितयात्मकं परमभिध्येयं सदा वल्लभम् ॥ १ ॥
भावैरंकुरितंमहीमृगवृशामाकल्पमासिंचितैः । प्रेम्णाकन्दलितं मनोरथमयैः शाखाशतैः संभृतम् ॥
लोल्यैः पल्लवितं मुद्रा कुसुमितं प्रत्याशया पुष्पितम् । लीलाभिः फलितं भजे व्रजवनी शृंगार कल्पद्रुमम् ॥ २ ॥

नि. ली. पू. पा. गोस्वामी श्री मुरलीधरलालजी महाराजात्मज

गोस्वामी श्री श्यामसुन्दरजी (त्रिभंगीरायजी)

(चौपासेनी - जामखंभालिया - बोरीवली)

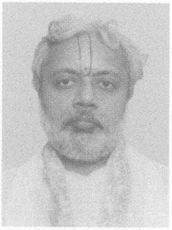

१०२-ए,
तेजल एपार्टमेन्ट,
सिम्पोली रोड,
बोरीवली (पश्चिम),
मुंबई-४०० ०९२.
✆ : २८९९ १८८३

३०१, श्री व्रजमुरली निकेतन,
स्वामी विवेकानंद रोड,
सिम्पोली सिग्नल के पास,
बोरीवली (पश्चिम),
मुंबई-४०० ०९२.
✆ : २८९९ १८८३.

क्रमांक : ११६,

श्रीवल्लभाब्द -५३३।

प्रति

श्री गुंसाईजी चेरीटेबल ट्रस्ट,

सस्नेह शुभाशीर्वाद।

भगवत्कृपा से पू० श्री निकुंजलता-बेटीजी की अध्यक्षता में उनके मार्गदर्शन एवं प्रेरणा द्वारा श्री पुष्टिमार्गीय कीर्तन प्रणाली की पंचवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत 'कीर्तन प्रवेशिका' का प्रकाशन होने जा रहा है।

यह अति आनिवार्य एवं सराहनीय है जोकि "श्री पुष्टि भक्ति कीर्तन प्रणाली" के प्रचार तथा प्रसार हेत्वर्थे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। श्री वल्लभीय वैष्णव सृष्टि जिनको श्री 'पुष्टिभक्तिकीर्तन' में विशेष रुचि हो, उनको यह पाठ्यक्रम के द्वारा सरलरूप से सूर, ताल और लय इन त्रिविधता का प्रत्यक्षरूप से ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

शुभकामनाओं सहित,
भावत्कः
गो० श्यामसुन्दरजी।

शुभम् किमधिकम्।

|| श्रीकृष्णाय नमः ||

|| श्रीमद्वल्लभविट्ठलेशी विजयते ||

H.H. Goswami Shri Chandragopalji Maharajshri, Baroda.

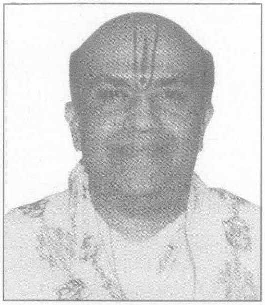

Office :
'Shri Radhakrishna Kunj,
B-41/1, Shrinagar Soc. H-Road,
Behind Dinesh Mill, Akota Road,
Baroda-390 020.
T.fax : 0265-2326897

पूजनीय श्रीनिकुंजजीजी द्वारा प्रस्थापित श्रीगुंसाईजी चेरीटेबल ट्रस्ट-बम्बई द्वारा पूजनीया श्रीजीजी की आज्ञासे वैष्णवजनों में कीर्तनसेवा-ज्ञानहेतु पञ्चवर्षीय कीर्तन प्रशिक्षण की सत् प्रवृति की जा रही है व तदर्थ **'कीर्तन प्रवेशिका'** से लेकर **'कीर्तन विशारद'** पर्यन्त का परीक्षावाही अभ्यासक्रम चलाया जाता है एवं उसमें कई वैष्णव परिवार सफल-लाभान्वित हुए हैं यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है । पूजनीय श्रीनिकुंजजीजीने बम्बई शहरमें निवास करके ३८ वर्षों में बम्बईमें कीर्तनप्रशिक्षण व सत्संग की अभूतपूर्वक क्रान्ति की है । परमात्मा परब्रह्म श्रीकृष्ण-गोवर्द्धनधरण, श्रीआचार्यचरण, श्रीप्रभुचरणके श्रीचरणयुगलों में यही अभ्यर्थना कि पञ्चवर्षीय प्राशिक्षण पानेवाले सभी वैष्णवजन सफल हों एवं वे विशुद्ध पुष्टिपद्धतिमें कीर्तनगान द्वारा अपने घरमें विराजमान श्रीप्रभुकी प्रसन्नताका-सन्तोषका सम्पादन करें ।

पुनश्च - श्रीगुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट के लिये, ट्रस्टके सभी ट्रस्टीजनों के लिये, संस्थाके सभी (स्त्री-पुरुष) कार्यकरोंके लिये, अभ्यासक्रम सुबद्ध करके प्रकाशनार्थ तैयार करनेवालों के लिये, कीर्तन प्रशिक्षकों के लिये, शिक्षण पानेवालों के लिये व इस प्रकाशन के लिये मेरी और से अनेक शुभकामनाएं प्रेषित करता हुं । इति शम् ।

गोस्वामी चन्द्रगोपाल

गोस्वामी चन्द्रगोपाल - वडोदरा

पूज्यपाद श्री निकुंजलताबेटीजी महोदया

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्टके प्रेरक, संस्थापक एवं
पुष्टिभक्तिसंगीत अभ्यासक्रमके प्रणेता

जो सुख होत गोपाल गाये

पुष्टि भक्ति प्रशिक्षणमें ''कीर्तन प्रवेशिका'' पाठ्यक्रमांक १ के माध्यम से सर्व प्रथम प्रवेश करनेमें उत्सुक कीर्तन रसार्थी सभी मेरे प्रिय शिक्षार्थी जन ! यह नूतन रूपमें नई पुस्तिका ''कीर्तन प्रवेशिका'' प्रस्तुत करते हुए मुझे अतीव आनन्द हो रहा है। मुझे विश्वास है कि कीर्तन प्रवेशिका के इस नये रूपसे सीख कर आप सभीको कीर्तनगान अधिक रुचिपूर्ण और अच्छा ही लगेगा ।

श्रीमद् आचार्यचरण श्री वल्लभाचार्य महाप्रभुजीने श्रीमद् भागवतका दोहन कर जो रसामृतका दान प्रदान किया वो सेवा है। आपने प्रभुकी सेवा द्वारा भगवद् प्राप्तिका एवं भगवद् रसानुभवका मार्ग दिखलाया। रसो वै स: रसेश्वर श्री कृष्णकी सेवामें राग, भोग, श्रृंगारका प्रकार प्रकट किया।

प्रभुचरण श्री विठ्ठलनाथ श्री गुसांईजीने प्रभुके सुखका, स्वभावका एवं समय समय पर प्रभुने की हुई आज्ञा को ध्यानमें रखकर सुव्यवस्थित सेवा प्रणालि बनाई और सेवा मार्गका अद्भूत विकास किया । गीत संगीत सागर ऐसे श्री गुसांईजीने प्रभुके बालभाव और किशोरभाव अनुरुप भोग और शृंगार क्रमके साथ साथ तद् तद् ॠतु एवं उत्सवका ध्यान सुव्यवस्थित करते हुए सेवा समयकी लीला-भावना, भक्त हृदयके भाव, नित्यके एवं तद् ॠतु अनुसार शास्त्रीय राग-रागिनीयाँ और विविध वाद्योंको भी सेवामें उपयुक्त किये।

अपनी ही लीलाका भावसभर गान सुनकर हमारे प्रभु अतीव प्रसन्न होते हैं और भक्तको भी इन्हें गा कर या सुन कर मधुराधिपति प्रभुका लीलामाधुर्य रोम रोममें उच्छलित हो जाता है। ये कीर्तन साक्षात् प्रभुके लीलासमुद्रमें एकरस कर देते हैं। कीर्तन भक्ति प्रभुके साथ तन्मय होने का श्रेष्ठ साधन है। कीर्तनगान चित्तवृत्तियोंको लौकिकमेंसे हटा कर मनको प्रभुमें तन्मय कर देता है, प्रभुमें सहजतया निरोध हो जाता है यह नि:शंक है।

आजसे करीब ३५-४० वर्ष पूर्व कीर्तन प्रशिक्षण के वर्ग सर्व प्रथम माटुंगामें

''बृहद् मुंबई वैष्णव महिला समाज'' अंतर्गत श्री मुरारीलाल चतुर्वेदी के सहयोगसे प्रारंभ किये थे। धीरे धीरे वैष्णवोंकी अभिरुचि प्रभुकृपासे बढ़ती गई और श्री विठ्ठलदासजी बापोदराके सहयोगसे कीर्तन शिबिरों सम्मेलनों और वर्गों का आयोजन भी होने लगा। आज हमारी कीर्तन निपुण बहनें भी मुंबई एवं उपनगरोंमें कीर्तन वर्गोमें वैष्णवोंको प्रशिक्षण दें रही है । श्री गुसांईजी चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यमसे इस तरह कीर्तन वर्गोंका विस्तार होते होते आज देशविदेशमें अनेक कीर्तन वर्ग और इस पाठ्यक्रमके माध्यमसे वैष्णवों ने कीर्तन सिख कर अपने सेव्य प्रभुको रीझानेका प्रयत्न किया है।

कीर्तन शिक्षा पानेवाले विद्यार्थी शास्त्रीय संगीतके स्वर-ताल से अच्छी तरह ज्ञात हो, कीर्तन सुव्यवस्थित स्वरतालमें गा सके एवं तत् विषयक संपूर्ण ज्ञान हो, इसी लक्ष्य को ले कर कीर्तन प्रशिक्षणका यह पंचवर्षीय अभ्यासक्रम ''कीर्तन प्रवेशिका'' से ले कर ''कीर्तन विशारद'' तक तैयार किया है। कीर्तन गान सिखने की पंद्धति वैसे तो परम्परासे गुरुमुखसे सुन कर गान करने की चली आ रही है, किन्तु वर्तमान युगमें सभी स्थानों पर पारम्पारिक शास्त्रीय रूप से कीर्तन सिखानेवाले शिक्षक भी उपलब्ध नहीं हैं और आजकी भागदौडमें शान्तिसे, गुरु परम्परासे शिक्षण पाने के लिए समयका भी अभाव है। इसलिए प्रारंभिक कीर्तन प्रशिक्षण पाने के लिये स्वरलीपिके साथ सीखना आसान बन जाता है। यद्यपि स्वरलीपि सह कीर्तनकी कुछ पुस्तकें पहले भी प्रकाशित हुई हैं तदपि पाठ्यक्रमकी इन पुस्तकोमें स्वरलिपि एक आधाररूप बंधारण के लिए सिखने हेतु दी गई है। जैसे जैसे विद्यार्थी अपने अभ्यासमें आगे बढ़ता है वैसे अपने प्रयत्नसे और श्री हरि-गुरुकी कृपासे शास्त्रीय रागों की गहन जानकारी के साथ मुक्त रुपसे रागका स्वरुप बनाये रखते हुए भावपूर्वक उत्तम कीर्तनगान करके अपने सेव्यको रीझा सकता है।

इस पुस्तिकामें पू. श्री श्यामुदादा (गो. श्री. श्याम मनोहरजी महाराजश्री) एवं गो. श्री श्याम सुन्दरजी बावा (गो. श्री. श्यामसुन्दरजी महाराजश्री) ने आशिर्वचन दिये, मेरी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ । साथही ''श्री वल्लभाचार्यचरण निर्दिश्टा पुष्टिभक्ति सेवा साधनामें कीर्तनगानकी उपयोगिता'' नामक आलेखके लिये मैं अपने

लघुभ्राता चि. श्री. चन्द्रगोपालबावा (गो. श्री. चन्द्र-गोपालजी महाराजश्री) को मेरे हार्दिक धन्यवाद एवं आशिर्वाद देती हूँ ।

सुप्रसिद्ध कीर्तनकार श्री जमनाप्रसादजीने भी वैष्णव आसानीसे सीख सके ऐसें हेतुसे अभ्यासक्रममें दिये गये कीर्तनोंकी सरल स्वरलीपि बनाई है और स्वरलीपिके साथ कीर्तनगान किया है जो आज सीडी, डी.वीडी और ओडियो केसेट के रूपमें उपलब्ध है। श्री जमनाप्रसादजी शर्माको मैं हार्दिक धन्यवाद देती हूं। श्रीमती उर्मिलाबेन वोराने इस पुस्तिकाके नवीनरूपमें जो सहकार दिया है उन्हें भी मैं अपने हृदयसे आशीर्वाद देती हूँ। श्रीमती नयनाबेन निर्मल द्वारकादास एवं कु. ख्याति ने भी मेरी आज्ञानुसार और मेरी भावनाओंका ख्याल रखते हुए कीर्तनप्रवेशिकाकी इस पुस्तकको नया रूप दिया है, उसे भी मैं अपने हृदयसे धन्यवाद और आशीर्वाद देती हूँ। श्रीमती कल्पनाबेन शाहने केसेटमें उद्घोषकके रूपमें जो सेवा दी है उन्हें भी मैं धन्यवाद देती हूँ।

मेरी शुभकामनाएँ हैं की वल्लभीय वैष्णव सृष्टि इस पाठ्यक्रमका संपूर्ण लाभ उठायें और अपने सेव्यको सुन्दर कीर्तनगानसे रीझाये । प्रभुके गुणगानमें जो आनन्द है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। सूरदासजीने ठीक ही तो कहा है.. ''जो सुख होत गोपाल गाये।''

निकुञ्जलता बेटीजी
सूरत, बड़ौदा, मुंबई

पाठ १ : संगीत विषयक जानकारी

१.१ : संगीत :

''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं
त्रियं संगीतमुच्यते''

- संगीत रत्नाकर (१/२१)

अर्थात् गायन वादन और नृत्यके त्रिवेणी - संगमको संगीत कहते हैं। जैसे गंगा लौकिक, श्री यमुना मानसिक और सरस्वती दैहिक संतापों का नाश करती है, उसी तरह संगीतरूपी त्रिवेणी, त्रिविध तापोंका नाश करती है।

१.२: वैदिक संगीत:

अति प्राचीन कालमें वैदिक संगीतका प्रचार था, इसका प्रमाण हमें वेदोंसे मिलता है। 'ऋगवेद' में वीणा, बंसी, डमरू, मृदंग, आदि वाद्यों का उल्लेख मिलता है जबकि सामगान की पद्धति संगीतात्मक थी। कहा जाता है कि सामगानमें पहले केवल तीन स्वरोंका प्रयोग होता था जिनको 'उदात्त' 'अनुदात्त' और 'स्वरित' कहते थे। आगे चलकर जैसे एक - एक करके स्वर बढ़ते गये, वैदिक कालमेंही साम-गान सप्तस्वरोंमें होने लगा।

सामगान से ही कालान्तरमें ध्रुपदगान की प्रणाली विकसित हुई जिसे महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यजीने अपने आराध्य प्रभुकी सेवा उपासनामें स्वीकार किया।

'पाणिनीय शिक्षा' तथा 'नारदीय शिक्षा' में निम्नलिखित श्लोक मिलता है जिसके आधार पर सप्त स्वर, उनके उदात्त, अनुदात्त और स्वरित के अन्तर्गत इस प्रकार आते थे :-

''उदात्ते निषादगांधारौ अनुदात्त ऋषभधैवतौ ।

स्वरितप्रभवा ह्येते षड्जमध्यमपंचमा:।।''

'याज्ञवल्लक्य - शिक्षा' में भी इसी प्रकारका वर्गीकरण मिलता है। वैदिक कालमें गायन के साथ - साथ नृत्यकला भी प्रचलित थी जिसका प्रमाण 'ऋगवेद' (५/३३/६) में मिलता है - 'नृत्यमनो अमृता'।

१.३: मानव शरीरमें संगीत:

संगीत से केवल आनंदानुभूति ही नहीं होती, ध्वनियाँ मानसिक स्थितियों की भी सूचक हैं। साथही ये हमारे मनोभावको प्रभावित करती हैं। संगीत हमारी आत्मामें भक्तिमय अनुभूतियाँ भर देता है। संगीतमें एक गति होती है और हमारी क्रियाएँ भी गत्यात्मक होती हैं। दोनोंमें सादृश्य होने के कारण ही, मात्र ध्वनिमय रागिनियाँ हमारी आत्माको प्रभावित कर लेती हैं।

संगीत प्राणीमात्रमें विद्यमान है, केवल उसे समझनेकी और बाहर लानेकी आवश्यकता है। मानव शरीरमें सातों स्वरोंका प्रभाव रहता है। जैसे पैर के तलवेके नीचेसे जंघा तक षड़ज स्वर विद्यमान है। दोनों इन्द्रीयोंमें रिषभ, उदरमें गांधार, मन या हृदयमें मध्यम, गलेमें पंचम, मुखमें धैवत और मस्तकमें निषाद। इसी प्रकार सातों स्वरोंका सप्तक यदि सुरीला हो तो हमारा शरीरभी सुन्दर और स्वस्थ है।

संगीतको देववाणी भी कहा जाता है क्योंकि यह सुलभ होते हुए भी हर किसी को प्राप्त नहीं हो सकती। इसके लिए अपने अंदर दैवी अंशका होना बहुत जरूरी है, तभी आप संगीत सुन, समझ और गा सकते हैं।

१.४: संगीत और पुष्टिभक्तिसंगीतमें अंतर:

संगीतकी मुख्यतया दो पद्धतियाँ मानी जाती हैं। एक है उत्तर भारतीय 'हिंदुस्तानी' संगीत पद्धती और दुसरी दक्षिण भारतीय या 'कर्णाटिक' पद्धती ।

दक्षिण भारतीय पद्धतीने अपने प्राचीन मूल्य और परंपराओंको संभालकर रखा है, जबकि उत्तर भारतीय पद्धतिमें दूसरी संस्कृतियों के प्रभावसे काफी परिवर्तन हो चुका है। फिरभी पुष्टिमार्गीय अष्टछाप कीर्तन संगीतने वेदकी परंपराको बहुधा जतनसे संभालकर रखा है। पुष्टिमार्गमें कीर्तनको पंचम वेद भी माना गया है क्योंकि वेद, भागवत आदि शास्त्रोंकी तरह ये प्रभुका नामात्मक स्वरूप है।

१.५ : पुष्टिभक्तिसंगीत की विलक्षणता एवं विशेषता:

अपने सेव्य प्रभु श्रीकृष्ण रसो वै सः हैं। आनन्दस्वरूप हैं। उनकी सेवा-प्रणालि भी रसात्मक है। पुष्टि प्रभु संगीतकी मधुर लहरियों के साथ ही जागते हैं, श्रृंगार करते हैं, आरोगते हैं, गौचारणादि लीलाएँ करते हैं और शयन करते हैं। पुष्टि प्रभुकी संपूर्ण दिनचर्या

संगीतात्मक है। प्रभुकी इन्हीं दिव्य लीलाओंका गान अपने अष्टछाप भक्त कवियोंने अपने गुरुकी कृपासे किया।

पुष्टिभक्तिसंगीतकी विलक्षणता मुख्यतया यही है कि यह केवल अपने सेव्यस्वरूपको रिझानेके लिए ही भावपूर्ण, रसमय, लीलापरक पदोंमें गाया जाता है। यह किसी लौकिक मनोरंजनके लिए नहीं है। इसका एक अति प्रसिद्ध उदाहरण नीचे दिया गया है।

एक बार संगीत सम्राट तानसेनजी प्रभुचरण श्री गुसांईजी के दर्शन के लिये गये। उनके सुन्दर संगीतसे प्रसन्न होकर श्रीगुसांईजीने उन्हें पुरस्कार रूप एक दुपट्टा, ५०० सिक्के और उपर एक कोडी रखकर भेट दी। भेटमें कोडी देखकर आश्चर्यचकित तानसेनजी ने कोडीका प्रयोजन श्री गुसांईजीसे पूछा। उत्तरमें श्री गुसांईजीने कहा कि अति सुन्दर संगीतकी भेट जिस प्रभुने दी है, यदि संगीत उसीको रिझानेके लिये न हो, तो उसकी कीमत कोडी जितनी है। इस प्रसंगसे यही दृष्टिगत होता है कि पुष्टिभक्ति संगीत केवल श्री ठाकुरजीको रिझानेके लिये है - लौकिक मनोरंजन के लिए नहीं।

१.६ : कीर्तनकी विशेषता :

हमारे कीर्तन किसी कविकी कल्पनायुक्त काव्यरचनाएँ नहीं है, अपितु जिन भक्तकवियोंने अपने गुरुकी कृपासे साक्षात श्री प्रभुकी लीलाएँ प्रत्यक्ष देखीं, उन लीलाओंका रसानुभव किया, उसीका भावयुक्त गान करके प्रभुको रीझाया, वही रचानाएँ हैं। ये कीर्तन स्वर-ताल और लयबद्ध होते हुए भगवल्लीलाकी भावभावनाओंसे सभर हैं। श्री महाप्रभुजी एवं श्री गुसांईजीके प्रमेयबलका यह सामर्थ्य है कि इन महानुभावोंके द्वारा रचित पदों का गान जब हम करते हैं तब पुष्टिप्रभु उन लीलाओमें बिराजमान होते हैं।

१.७ : कीर्तनगानमें राग योजना :

पुष्टिमार्ग भगवत्स्नेहका मार्ग है इसलिए प्रभुके सुखका ध्यान रखते हुए अष्टयाम सेवा प्रकार नियोजित किया गया है। श्री ठाकुरजीको प्रात: जगानेसे लेकर सायं पोढाने तककी सेवामें ये पद शास्त्रीय पद्धतिसे नियत रागोंमें गाये जाते है। दिन-रातके विविध समयके वातावरण अनुरूप अलग-अलग राग, अलग-अलग समय पर गाये जाते हैं। जैसे सुबहमें भैरव, रामकली, देवगंधार, खट, बिलावल, आसावरी, धनाश्री, सारंग,

तोडी, इत्यादि राग गाये जाते है, जबकि संध्याकालीन सेवाक्रममें नट, पूर्वी, सोरठ, हमीर, गोरी, श्री, कल्याण, कान्हरा अडाना, केदार, बिहाग, इत्यादि.

ऋतुचक्रका ख्याल रखते हुए प्रभु सुखार्थ शीतकालमें उष्ण प्रकृति के रागों में कीर्तन गाये जाते हैं जैसे ललित, मालकौंस, तोड़ी इत्यादि। उष्णकालमें शीत प्रकृतिके राग गाये जाते हैं जैसे विभास, सारंग, इत्यादि। वर्षाऋतुमें मल्हारके पद विशेष रूपसे गाये जाते हैं। बसंतऋतुमें बसंत पंचमीसे बीस दिन तक केवल राग बसंतमें कीर्तनगान किया जाता है। राग सोरठ स्नानयात्रासे संध्यार्तिमें शुरु होता है और रथयात्रा तक विशेष रूपमें गाया जाता है। रथयात्रासे पंद्रह दिन तक मल्हारके साथ दूसरे रागोमें भी कीर्तनगान होता है। ऋतुसंधिकालमें भी प्रभुके सुखका सुक्ष्म विचार करके ऋतुसंधिकालीन रागोंका विनियोग सेवामें होता है। जैसे की उष्णकालकी समाप्ति होने पर और वर्षाऋतुका प्रारंभ होने के पूर्व तुरंत ही राग मल्हार नहीं गाया जाता अपितु राग सूहा, गौड-सारंग, सोरठ इत्यादि रागोंका गान होता है। बादमें मल्हार राग रथयात्रासे शुरु होता है। इसी तरह शीतकालकी समाप्ति और वसंतऋतुके बीच वसंत बहारके पद गाये जाते है।

पाठ २: स्वर लेखन पद्धति

१) शुद्धं स्वर लिखने के लिए कोई निशान नहीं किया जाता है। उदाहरणार्थ :- सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सां।

२) कोमल स्वर याने शुद्ध स्वर के नीचे का स्वर । तीव्र स्वर याने शुद्ध स्वर से ऊंचा स्वर। उन कोमल - तीव्र स्वरोंको विकृत स्वर भी कहते हैं। कोमल स्वर की निशानी उन स्वरों के नीचे एक आडी रेखा देकर दृष्टिगत की जाती है जैसे रे॒, ग॒, ध॒, नी॒। तीव्र स्वर के लिए 'म' के ऊपर खडी रेखा दिखाई जाती है जैसे 'म॑'।

३) मंद्र सप्तक दर्शाने के लिये स्वरके नीचे एक बिन्दू का निशान किया जाता है जैसे म़ प़ ध़ ऩी।

४) मध्य सप्तक दर्शानेके लिये स्वरके ऊपर या नीचे कोई बिन्दू चिन्ह नहीं किया जाता जैसे सा, रे, ग, म आदि।

५) तार सप्तक दर्शानेके लिए स्वर के ऊपर एक अनुस्वार लगाया जाता है जैसे सां, रें, गं, मं, पं।

६) चंद्र निशान के अंदर आनेवाले सभी स्वर एक मात्रामें गाये जाते हैं। जैसे सारे, गमप, मपधनी, इत्यादि।

७) जिन दो स्वरोंके ऊपर चंद्र निशान किया जाता है तो उसे मींड दर्शक कहते हैं।

उसे गाने के लिये पहले स्वरसे आखरी स्वरतक घर्षण करते हुए गाना है। उदाहरणार्थ :- प रे, म रे।

८) जिन स्वरोंके पीछे एक रेखा होगी उन्हें एक मात्रा बढाकर गाना है। जैसे सा - रे- ।

पाठ ३: स्वर अभ्यास

संगीत, गुरु प्रदत्त विद्या है। इसलिये इसे सीखने से पहले अपने गुरुका ध्यान अवश्य कर लेना चाहिये।

आचार्य चरण द्वन्द्वं भक्तिज्ञानाब्ज भास्करम् ।
नमस्यामि मन:कर्म वाग्भि:रत्नस्तमोपहम् ।।

अर्थात् श्रीमद्आचार्यचरणके दोनों चरण जो भक्ति और ज्ञानरूपी कमलको विकसित करनेवाले सूर्य के समान हैं, और जो अंत:करणमें रहनेवाले अंधकारको दूर करनेवाले है, उन चरण कमलको मैं मन, कर्म और वाणीसे प्रणाम करता हूँ।

अपने गले को संगीतके अनुरूप बनाने के लिये सामान्य स्वरज्ञानकी आवश्यकता होती है। इस लिए शुद्ध स्वरोंका अभ्यास करना चाहिए।

सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सां
सां, नी, ध, प, म, ग, रे, सा

इस प्रकार इन स्वरोंका अभ्यास लय-बद्ध तरीकेसे करना चाहिए।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
सा	रे	ग	म	प	ध	नी	सां	सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा

स्वर और लयका सामंजस्य दूध में मिसरी की तरह होना चाहिए क्योंकि संगीतकी पूरी इमारत स्वर और लय पर आधारीत है।

इसके बाद नित्य अलंकारोंका अभ्यास करना चाहिए।

१. सासा, रेरे, गग, मम, पप, धध, नीनी, सांसां,
सांसां, नीनी, धध, पप, मम, गग, रेरे, सासा।

२. सासासा, रेरेरे, गगग, ममम, पपप, धधध, नीनीनी, सांसांसां,
सांसांसां, नीनीनी, धधध, पपप, ममम, गगग, रेरेरे, सासासा।

३. सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनी, धनीसां,
सांनीध, नीधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा।

४. सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनी, पधनीसां,
सांनीधप, नीधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा।

५. साग, रेम, गप, मध, पनी, धसां,
सांध, नीप, धम, पग, मरे, गसा ।

पाठ ४: ताल विभाग

४.१) **लय** :- किसीभी प्रकारकी गतिको लय कहते हैं।

४.२) **ताल** :- यदि लयको मात्राओं द्वारा बांध दिया जाय तो उसे ताल कहते हैं। जैसे १६ मात्राओंसे गतिको बांधने को तीनताल कहते हैं। उसी तरह ८ मात्रासे कहेरवा ताल और ६ मात्रासे दादरा ताल बनता है।

४.३) **त्रिपुट या तीनताल** - मात्रा १६ खंड - ४

ताली - १, ५, १३ मात्रा पर

खाली - ९ मात्रा पर

पखावज के बोल :

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
क	-	धि	ट	धि	ट	धा	-	ग	-	ति	ट	ति	ट	ता	-
X				२				०				३			

तबले के बोल :

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
X				२				०				३			

४.४) **ताल कहेरवा** - मात्रा - ८ खंड - २

ताली - १ मात्रा पर

खाली - ५ मात्रा पर

पखावज के बोल :

१	२	३	४	५	६	७	८
क	ति	ट	ता	ग	ति	ट	ता
X				०			

तबले के बोल :

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	गे	ना	ति	न	क	धि	न
X				०			

इस तालका प्रयोग चलतीमें ज्यादा होता है।

४.५) **ताल दादरा** - मात्रा ६ खंड - २

ताली - १ मात्रा पर

खाली - ४ मात्रा पर

तबले के बोल

१	२	३	४	५	६
धा	धि	ना	धा	ति	ना
X			०		

पुष्टिमार्गीय संगीतमें दादरा ताल नहीं बजता है लेकिन ध्रुपदमें इसका आडीमें प्रयोग किया जाता है।

पाठ ५ : हमारी कीर्तनप्रणाली

लेखिका :- पूज्यपाद गो. श्री निकुंजलता बेटीजी महोदया

भारतीय शास्त्रीय संगीत अपने आपमें विशिष्ट स्थान रखता है। शास्त्रीय संगीत बद्ध पुष्टिभक्ति रुप कीर्तन का हमारे यहाँ भगवत सेवामें एक विशिष्ट स्थान है । इस पुष्टिभक्तिसंगीतको कई लोग हवेली संगीतके नामसे भी जानते हैं। पुष्टिमार्गीय मंदीर, हवेलीयोमें, एवं गृहसेवामें श्रीको जगानेके पहले ही कीर्तन गानकी शुरुआत हो जाती है। श्रीको जगानेसे लेकर मंगलभोग, मंगलादर्शन, स्नान, अभ्यंग, शृंगार ओसरा, शृंगार दर्शन, ग्वाल, धैया आरोगे तब, पलना, राजभोग आये, अर्ध समय, राजभोगसरे, बीडी आरोगे, एवं राजभोग दर्शन तक सुबहकी सेवामें सेवाके साथ साथ सन्मुख एवं बाहर कीर्तनीयागलीमें कीर्तन गान होता है। वैसे ही सायं सेवामें भी उत्थापन या भोग, आरतीसे लेकर शयनभोग, शयन दर्शन एवं श्रीको पोढाने तक कीर्तनगान होता है। यह गान सुबह से लेकर सायं तकके रागानुसार एवं श्रीठाकोरजीकी लीलानुसार होता है । नित्य सेवामें नित्यके कीर्तन उपरांत सालभरमें जो जो उत्सवादि आते है तब तत् तत् उत्सवानुसार, जैसेकी जन्मोत्सव-जन्माष्टमी, राधाष्टमी, श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांइजी आदिके जन्मोत्सव एवं विशिष्ट दिनोंमें प्रभुकी विशिष्ट लीलाएं जैसे कि - होरी, हिंडोरा, दान, सांझी, रास, गोवर्धनलीला इत्यादि के विशिष्ट कीर्तन उन दिनोंमें तत् ऋतुअनुसार रागोंमें गाये जाते हैं। यही विशेषता, विलक्षणता हमारे कीर्तनोंमें है। ये कीर्तनोंमें जो मधुरता है, स-रसता है, लीला एवं राग-रागनियोंके प्रकारसे, विभिन्न तालोंसे जो वैविध्य है, अद्भूत है। ध्रुवपद-धमार शैली बद्ध हमारे ये कीर्तन सिर्फ हमारे प्रभुके लिये ही है, प्रभुकी प्रसन्नता एवँ रीझानेके लिये ही है।

कीर्तनका प्रारंभ इसाकी पंद्रहवी सदीमें हुआ । पदयात्रामें पधारे हुए श्रीवल्लभाचार्यजीको झारखंडमें श्रीश्रीनाथजीकी आज्ञा बाहर प्रगट करनेकी हुई तब श्रीवल्लभ ब्रजमें पधारे, सदुपांडेके घरके बाहर-चोंतरे पर बिराजकर सदुपांडे एवं उनके परिवारसे श्रीनाथजीके मुखारविन्द इत्यादि की प्रागट्य की कथा सुनी। दूसरे दिन श्रीश्रीनाथजीको श्रीगिरीराजमेंसे बाहर प्रगट कर प्रस्थापित किये । तत्काल एक छोटासा

मन्दिर सिध्द कराके श्रीनाथजीको बिराजमान किया । श्री गिरीराजकी गुफामें बसे विरक्त संत रामदासजीको बुलवाकर उन्हें श्रीजीकी सेवा सौंपी । इस दौरान जमनावता गाँवके कुंभनदासजी श्रीमहाप्रभुजीकी शरणमें आये थे । आपकी आज्ञासे श्रीनाथजीको दंडवत् प्रणाम कर के उनके सन्मुख राग बिलावलमें और धमारतालमें ''सांजके सांचे बोल तिहारे पद गाया।'' यह कीर्तन श्रवण कर श्रीनाथजी एवं श्रीमहाप्रभुजी अतीव प्रसन्न हुए । इस तरह गुरु कृपासे निकुंजलीलाके रसानुभव करनेवाले कुंभनदासजीको श्रीनाथजीकी कीर्तन सेवामें सर्व प्रथम नियुक्त किया । इस तरह पुष्टि सम्प्रदायमें श्रीकी कीर्तन सेवाका प्रारंभ हुआ । गीतसंगीत सागर प्रभुचरण श्रीगुसांईजीने कीर्तन प्रणाली अधिक व्यवस्थित बनाई । आपने सेवाक्रममें कीर्तन क्रम सुव्यवस्थित करते हुअें इन बातोंका भी खयाल किया जो सेवामें उस समयकी लीला भावना, भक्त हृदयके भाव, नित्यके एवं तद् ऋतु अनुसार शास्त्रीय राग-रागिनियाँ सेवामें उपयुक्त हो। आपने भगवत सुख एवं प्रसन्नताको ध्यान रखते हुए, श्री आचार्य चरणकी आज्ञानुसार एवँ स्वयं श्रीश्रीनाथजीकी आज्ञानुसार अष्टयाम सेवा प्रकारका विस्तार करते हुए सेवामें राग, भोग, शृंगार का विस्तार किया एवं सुव्यवस्थित करके उसे टोच शिखर पर पहुँचाया ।

श्रीजीकी अष्टप्रहर सेवामें आठ कीर्तनकारोंकी सेवा क्रमिक बनाई। इस तरह कीर्तन परंपराको सुदृढ करनेके लिये श्रीगुसांईजीने ''अष्टछाप'' भगवदीय कीर्तनकारोंकी विधिवत् स्थापना की। एवं 'राग' संगीत प्रणालीके उत्कर्षार्थ अष्टसरवाकी मंडली बनाई। उनमें ये चार श्रीमहाप्रभुजीके सेवक कुंभनदासजी, सुरदासजी, कृष्णदासजी और परमानंददासजी और चार आपके ही सेवक गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदासजी और विष्णुदास छीपा थे ।

बादमें विष्णुदास छीपाकी वृद्धावस्थाके कारण नंददासजीको इस सेवामें नियुक्त किया । ये सभी एक अच्छे कवि ही नहीं, एक अच्छे गायक भी थे ।

अष्टछापकी स्थापनाका समय संवत् १६०७ या संवत १६०८ का प्रारंभ काल माना जाता है। इस प्रकार अष्टछापकी स्थापना के समयसे श्रीजीके सन्मुख कीर्तन गानकी सेवा व्यवस्थित और शास्त्रीय प्रणालीके अनुसार होने लगी ।

कीर्तनगानके साथ विभिन्न वाद्योंको भी संमिलित किया । और समयके अनुरुप किन वाद्योंका कब उपयोग किया जाय यह भी निश्चित किया । कीर्तनगानके साथ संगत करनेवाले वाद्योमें स्वरपेटी (हारमोनियम), मृदंग, सारंगी, वीणा और तानपुराका अधिक उपयोग होता है। प्रात:काल मंगलाके समय स्वर-पेटी और तंतूवाद्य जैसेकि वीणा, तंबूर इत्यादि वाद्य ही बजते है। मृदंग या पखावज मंगलाके बाद ही बजते है। जन्माष्टमी इत्यादि बडे उत्सव पर मंगला से हि मृदंग, झांझ इत्यादि बजना शुरु हो जाता है। झांझ विशेषतर बधाई गानमें एवं उत्सवों पर बजती है। होरी, फागुनके दिनोंमें विशेष वाद्योंसे संगत की जाती है। जैसे की झांझ, मंजिरा, डफ, मृदंग, किन्नरी, झालर, चंग, उपंग, मोहोचंग, इत्यादि अनेकों प्रकारके वाद्योंका उपयोग होता है। बधाई के दिनोंमें झांझ, शहनाई, नगाडे इत्यादि वाजिंत्रोंका उपयोग होता है। इस तरह कीर्तनमें राग-रागिनीयोंका समयानुसार नियोजन के साथ वाद्योंका भी सुनियोजन किया ।

ये अष्टछाप भगवदीय भारतीय संगीत शास्त्रके ज्ञाता ही नहीं, सुकवि एवँ उत्तम गायक भी थे। गुरुकी कृपा से इन भगवदीयोंने साक्षात प्रभुकी लीलाके दर्शन एवं अनुभव किया वही विविध राग-रागिनीयों के स्वरमें एवं विविध तालोंमें बध्द किया । वे नित्य नई पदरचना करते थे और अपने सुमधुर कंठसे श्रीनाथजीको एवं श्रीनवनीतप्रियाजीको प्रसन्न करते थे । जिससे उन्हें परमानंदकी अनुभूति होती थी । श्रीगुसांईजीके कालमें अष्टछाप कीर्तनकारोंके अलावा दूसरे और भी कीर्तनकारोंने अपनी पदरचना श्रीनाथजीके समक्ष गाकर कीर्तन सेवा कीथी, जो कुल मिलाकर चालीस से ज्यादा है। अष्ट छापसे लेकर सभी कीर्तनकारोंने पुष्टिसम्प्रदायमें ही नहीं, भारतीय संगीत शास्त्र एवं हिन्दी साहित्य जगतमें उत्कृष्ट साहित्य देकर बडा योगदान दिया है।

पाठ ६ : श्रीवल्लभाचार्यचरण निर्दिष्टा पुष्टिभक्ति-सेवा साधनामें कीर्तनगानकी उपयोगिता

लेखक : पूज्यपाद गो. श्री. चन्द्रगोपालजी महोदय

किसी भी प्रकारका संगीत हो वह मनमें आनन्द का विषय होता है। संगीतसे मनमें जिस प्रकार आनन्दकी व्याप्ति होती है उन क्षणों में उसमें मनुष्य का मन सर्व प्रकारके दु:खोंसे निवृत्त होकर सुखमय स्थितिमें निमग्न हो जाता है। इसी लिये व्यवहारमें संगीत को मनोरंजनका एक उत्तम साधन भी माना जाता है। यद्यपि संगीत मात्र मनोरंजन का साधन ही है ऐसा नहीं है अपितु यह आनन्द निमग्नता की एक उत्तमोत्तम साधना भी है ।

संगीत मात्र साधारणरूपमें आनन्दकी साधना का विषय है ऐसा नहीं है किन्तु याज्ञवल्क्यसंहितामें कहे अनुसार -

वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं निगच्छति ।।

अर्थात् - वीणावादन के तत्त्वको अच्छीतरह जाननेवाला, श्रुतिजातिके ज्ञानमें विशारद एवं तालको ठीक तरह जाननेवाला मोक्षमार्गका लाभ करनेवाला होता है । इस प्रकार संगीत मोक्षप्राप्ति में भी एक महत्त्वपूर्ण साधन ऋषियों द्वारा माना गया है। मोक्षमार्ग की किसी भी साधनामें मनका सहयोग अनिवार्य अपेक्षित है एवं दु:खानुभव से एवं विविध सुखकी कामनाओंसे विचलित-अस्थिर बना हुआ मन सहयोगके स्थान पर प्रतिरोधक भी बन जाता है। शास्त्रों में मन को दो प्रकार का बताया गया है -

मनो हि द्विविधं प्रोक्तं शुद्धं चाशुद्धमेव च ।
अशुद्धं कामसम्पृक्तं शुद्धं कामविवर्जितम् ।।

चाहे शुद्ध हो, चाहे अशुद्ध हो मन सदैव आनन्द का ही उपासक है, आनन्द ही उसकी खुराक है व उसके सभी रोगों का शान्तिरूप इलाज भी आनन्द ही है । किन्तु विकृत-विकारवाले-अशुद्ध साधनों से जब मन आनन्दकी अनुभूति करता है तब परिणाममें वह भी विकृत-अशुद्ध-अनन्त कामनाओंके विषवाला-दु:खोंसे पीडित-निर्बल बन जाता है। अत: उसकी स्थितिमें - शान्तिमें उपचारमें उपायरुप कोई अविकृत-विकार रहित साधनोंसे होनेवाला सुख या आनन्द ही हो सकता है । ऐसा सुख या आनन्द या तो कलाओं से हो सकता है **(कं सुखं लाति इति कला)** या तो संगीतसे ही सम्भव है कि जिसमें मन सुखका अनुभव करके भी विकृत - अशुद्ध नहीं बनता हो ।

यह संगीत जब भगवद्भाव-भक्ति से जुडता है तब यह संगीत मात्र मोक्षकारक ही नहीं अपितु भगवत्प्राप्ति - भगवत्प्रसन्नतामें भी महत्त्वपूर्णरीति से उपयोगी बन जाता है । यजुर्वेदके एक मंत्रमें बताया गया है कि-

'उप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं नोचेमानग्ये आरे अरभे च शृण्वते' (शुक्ल यजुर्वेद ३-११) अर्थात् - जो दूर रहते हुए भी पास रहकर हमारी वाणी सुनते हैं। ऐसे परमात्माकी प्रसन्नताके लिए यज्ञमें जाते हुए हमलोग उनके नाममन्त्रका कीर्तन करें। इस वेदमंत्रमें भी परमात्माकी प्रसन्नताके लिए प्रभु के मंत्ररूप नामोंका कीर्तन साधनरूपमें बताया है। कीर्तन शब्द संस्कृत व्याकरणें **'कृत्'** धातुको **'ल्युट्'** लगकर **'कीर्तन'** शब्द बनता है जो स्त्रीलिङ्ग, व नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग किया जाता है । इसी के ऊपरसे बना हुआ **'कीर्तना'** शब्द का अर्थ यश अथवा सस्वरपाठ होता है । ऋग्वेदका एक मन्त्र -

तमुस्तोतारः पूर्व्यं यथाविद् ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन ।

आस्य जानंतो नाम चिद्विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे ।।

इस मन्त्रमें प्रयोजित **'विवक्तन'** शब्दका सायणाचार्यने अपने भाष्य में **'संकीर्तन'** अर्थ ग्रहण किया है । इस प्रकार वैदिक साहित्य भी भगवत् प्रसन्नतामें कीर्तनगान को महत्त्वपूर्ण साधनके रूपमें स्वीकार करता है ।

पद्मपुराणमें श्रीमद्भागवतमाहात्म्य प्रकरणमें बताया गया है कि जब श्रीशुकदेवजी नारदादि ऋषियोंके समक्ष श्रीभागवतकथा का महत्त्व बता रहे थे तभी अतिप्रसन्न मुद्रामें भगवान वहां प्रकट हुए -

एवं ब्रुवाणे सति बादरायणौ मध्ये सभायां हरिराविरासीत् ।
प्रह्लादबल्युद्धवफाल्गुनादिभिर्वृतः सुरर्षिस्तमपूजयच्च तान् ।।
दृष्ट्वा प्रसन्नं महदासने हरिं ते चक्रिरे कीर्तनमग्रतस्तदा ।
भवो भवान्या कमलासनस्तु तत्रागमत्कीर्तनदर्शनाय ।।
प्रहलादस्तालधारी तरलगतितया चोद्धवः कांस्यधारी
वीणावादी सुरर्षिः स्वरकुशलतया रागकर्तार्जुनोऽभूत् ।
इन्द्रोऽवादीन्मृदङ्गं जय जय सुकराः कीर्तने ते कुमारा
यत्राग्रे भाववक्ता सरसरचनया व्यासपुत्रो बभूव ।।

(पद्मपुराणान्तर्गत भागवत माहात्म्य अ.६ श्लो. ८४-८५-८६)

इस प्रकार पौराणिक साहित्यमें भगवत्प्रसन्नातामें भक्तिमार्गीय कीर्तनगान की उपयोगिता एवं ऐसे भक्तों द्वारा किये जानेवाले कीर्तनगान श्रवण-दर्शन से शिव, भवानि, ब्रह्मादि द्वारा धन्यता का अनुभव कहा गया है। श्रीद्भागवत एकादश स्कन्धमें भी भगवान् उद्धवजीसे कहते हैं कि **'परिचर्या स्तुतिःप्रह्गुणकर्मानुकीर्तनम्'** यहां पर भगवान् भक्तिप्राप्ति के साधनरूपमें भगवानके गुण-कर्म अनुसार कीर्तन सुचित करते हैं एवं एकादशस्कन्धनवयोगेश्वर आख्यानमें कवियोगेश्वर कौन से गुण-कर्म ? इस जिज्ञासामें बताते हैं कि **'जन्मानि कर्माणि च यानि लोके'** एवं **'यानि लोके गीतानि'** भगवानने इस लोकमें जन्मधारण करके जो चरित्र किये हों वे एवं वे भी जो प्रेमीभक्तों द्वारा इस लोकमें गाये गये हों उन गुण-कर्मों का कीर्तन भक्ति-साधनरूप है एवं उससे फलरूपमें **'लभते मयि सद्भक्तिम्'** सद्भक्ति का लाभ होता है ।

श्री वल्लभाचार्यचरण इस पुष्टिपथके साधकों के लिये भक्तिवृद्धि तथा परमा-प्रेमलक्षणा भक्तिकी प्राप्ति के लिये जो साधन निर्दिष्ट करते हैं वह

बीजदार्ढ्यप्रकारस्तु गृहे स्थित्वा स्वधर्मतः।
अव्यावृत्तो भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः ।।

(भक्तिवर्द्धिनी)

ब्रह्मसम्बन्ध होने के अनन्तर अपने सद्गुरुसे पुष्ट भगवत्स्वरुपकी गुरु आज्ञानुसार स्वयं के घरमें रहकर वर्ण-आश्रमोचित धर्म का यथोचित - यथाशक्य परिपालन करते हुए अव्यावृत्तिपूर्वक श्रवण-कीर्तन-स्मरण सहित सेवा करना निर्दिष्ट करते हैं एवं इसीसे भगवानमें प्रेम-आसक्ति-व्यसन सिद्ध होकर विरह सामयिक सर्वात्मभाव स्वरुपा सर्वसे अधिक, सुदृढा, प्रेमात्मिका भक्ति का लाभ होता है । इस प्रकार भगवत्सेवाके साथ-साथ श्रवण-कीर्तन-स्मरण भी उतना ही आवश्यक है ।

यदि जीवनमें किसी भी संयोगवश अव्यावृत्ति करके अष्टप्रहर सेवा करना सम्भव न हो एवं मात्र एक याम मात्र (३घन्टा) या उससे भी कम समयमें सेवाका क्रम रखा हो या स्वरुपसेवा करना ही जिन लोगोंके लिये सम्भव न हो उन लोगोंके लिये भी श्रीआचार्यचरण यही साधन निर्दिष्ट करते हैं कि -

व्यावृत्तोऽपि हरौ चित्तं श्रवणादौ यतेत् सदा ।

(भक्तिवर्द्धिनी)

यहां पर श्रीआचार्यवाक्यमें 'श्रवणादौ' में आदि पदसे श्रवण-कीर्तन-स्मरण तीनों समझना चाहिये । आसक्ति-लोभ आदि रखे बिना, आवश्यक करके बाकी के समयमें श्रवण-कीर्तन-स्मरणमें चित्तको लगाने का प्रयत्न करना । इससे भी प्रभुमें प्रेम-आसक्ति-व्यसन सिद्ध होता है।

इस प्रकार पूर्ण भगवत्सेवा करनेवाले, कुछ समय सेवा करनेवाले या जिसे सेवा करना सम्भव नहीं उन सब के लिए भी कीर्तनगान का अत्यधिक महत्त्व है। श्रीमहाप्रभु संन्यासनिर्णय ग्रन्थमें **'गोपिकाः गुरुवः प्रोक्ताः, साधनं च तत्, भावो भावनया सिद्धः'** ऐसा बताते हैं। इस भक्तिमार्गके गुरुरूपमें श्रीव्रजभक्त हैं एवं उनके किये हुए साधनोंका ही आवर्तन व उनके ही भावका भावन वह पुष्टिभक्ति साधक है । अतः हमारे सम्प्रदायमें जो कीर्तनगान-पदसाहित्य है उसमें श्रीव्रजभक्तों के भावरूप जो-जो भी भगवल्लीला व्रजभक्तों के हृदयमें भावित हुई वही पद साहित्य है एवं यह भावरूप पदसाहित्य भी महानुभावों-अष्टछाप-भगवदीयोंकी वाणी द्वारा पुष्ट है, अतः यह पदगान हमारी साधनामें अत्यावश्यक उपयोगी होकर हमारे भावमें अभिवृद्धि करता है एवं श्रीप्रभुकी प्रसन्नताका भी सम्पादन करता है । कीर्तन वह श्रवण एवं स्मरण दो के मध्य कहा गया होने से श्रवण एवं स्मरण दोनों से सम्बन्ध रखता है । क्योंकि जो श्रवण किया है वही कीर्तन करना है एवं जो कीर्तन किया गया है उसीका स्मरण करना है । इस प्रकार की पुष्टि साधना पद्धति में कीर्तनगान स्वयंमें कई प्रकार महत्त्व रखता है ।

इसके उपरान्त भगवत्सेवाके समयमें कीर्तनगान एक और प्रकारसे भी हमारी साधनामें उपयोगी है । सेवा के समयमें प्रायः करके सेवासे अन्यत्र मन-बुद्धि को विचलित करनेवाले विघ्न उपस्थित हो जाते हैं। कभी किसीका फोन आजाता है, तो कभी कोई कुछ पूछने आ जाता है, तो कभी हमें खुदको कुछ याद आ जाता है तो दूसरे से पूछने की इच्छा हो आती है, तो कभी कोई मिलने या कहने-सुनने आ जाता है। ऐसे समय पर हमारे मन-बुद्धि सहित हमारी वाणी भगवत्कार्यसे इतर अन्यमें प्रवृत्त होते हैं और इस प्रकार भगवत्सेवामें हमारे मनमें जो रसवृद्धि होनी चाहिये उसकी जगह रसहानि हो जाती है। तब यदि हम कीर्तनगान उच्चस्वरमें करते हुए यदि सेवामें प्रवृत्त रहते हैं तो हमें भी अन्यमें प्रवृत्त होने का अवकाश नही रहता है एवं दूसरों को भी हमें कीर्तनगान करते हुए देखकर बीचमें बाधा पहुंचानेकी इच्छा भी नहीं होगी । कीर्तनगानके रसमें निमग्न एवं भगवत्सेवामें प्रवृत्त साधक को ही श्रीआचार्यचरणने भक्तिवर्द्धिनी में कहे प्रकारसे **'गृहस्थों की बाधकता एवं उनकी अनात्मता'** अनुभवमें आने लगती है ।

जिस व्यक्ति के मन-बुद्धि-वाणी-इन्द्रियाँ-शरीर एकमें प्रवृत्त न होकर यह पांचों अपने-अपने तरीके से अलग-अलगमें प्रवृत्त रहते हैं तब इन पांचों का बेमेलपन आवेग, काम, क्रोध, आलस्य, लालसा, अहंकार, मूढता, अनमनापन, अप्रियता आदि आनन्द विरोधी तत्त्वोंकों उपस्थित करके मनुष्यको दु:खोंके समुद्रकी गहराई में घूसा देते हैं। अत: यह आवश्यक है कि इन पांचोंमें परस्पर मेल बना रहे । तैत्तिरीय आरण्यक का कहना है कि **'मनुष्य जहां मनसे जाता है वह वाणीमें आता है एवं जो वाणीसे बोलता है वह क्रियामें आता है'** । अत: तीनों के परस्पर सम्बन्धसे जो क्रियामें होता है वह वाणीमें आता है एवं जो बोलता है वह मनमें जाता है। इस आधार पर हमारे जीवनमें जो भी जैसी भी कार्यपद्धति होगी मेल मिलाकर करने की या बेमेलपन से करने की परिणाममें वैसा ही मन-बुद्धि आदिमें घटित होगा अत: यह आवश्यक हैं कि नियमबद्ध रहने की हमारी कार्यपद्धति हो।

हम प्रथम ही यह विचार चुके हैं कि संगीतमय कीर्तनगान अन्य कई बातोंके उपरान्त मानस सुव्यवस्थामें भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण उपयोगमें आता है, अत एव हमारे यहां कीर्तनगान विशुद्धरूपसे शास्त्रीय नियमों के आधार पर नियमबद्धता से किया जाता है। सभी रोगों का बाह्य-आन्तर प्रकृतिसे सम्बन्ध है अत: प्रात: का वातावरण मध्याहन का - सायंका -रात्रीका वातावरण भिन्न-भिन्न प्रकृति का होता है । वैसे ही शीतकाल, उष्णकाल, बरसात, बसन्त, शरद आदि ऋतु भी एक दूसरे से भिन्न प्रकृति की होती है। वैसे ही आन्तरमें भी संयोग, वियोग, हास्य, करुण, भय, शान्ति, क्रोध, उत्कण्ठा आदि भावों में भी मनुष्यकी आन्तर प्रकृतिमें परिवर्तन होता रहता है। रागोंमें अलग-अलग प्रकारके स्वरोंकी स्थिति वह पूर्वोक्त प्रकृति वैचित्र्य के आधार पर ही रही हुई है। संगीत के सभी स्वर व सर्व प्रकारकी लय वह प्रकृति वैचित्र्यमें भिन्न-भिन्न किसी न किसी प्रकारसे सम्बन्धवाले हैं। अत: इन सबके विचारपूर्वक शास्त्रीय नियमबद्ध हो कर जब साधक कीर्तनगान का अभ्यास-आवर्तन करता है तो उसके शरीर-इन्द्रियाँ-वाणी-बुद्धि-मन सबका भावरूप भगवानमें प्रवृत्त रूप मेल होकर उसकी साधना आचार्योपदिष्ट सिद्धि को प्राप्त करनेवाली बनती है। अत: कीर्तनगानभी मनस्वी - मनमाना नहीं किन्तु शास्त्रीय नियमबद्ध होना आवश्यक है।

पाठ ७: राग विभाग

७.१

राग - भैरव

“ध - रि वादी - संवादि करि, रि - ध कोमल सुर मान ।
प्रात समय नीको लगे, भैरव राग महान् ।।”

यह राग अति प्राचीन और गंभीर राग है। इस रागमें रे - ध स्वर अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। राग भैरव के आरोहमें रिषभ स्वरका प्रयोग अल्पत्व है तथा मध्यम से ऋषभ पर मींड़ लेकर आनेमें इसका माधुर्य बढ़ता है। यह राग मनको स्थिर करता है और तनमें स्फूर्ति देता है।

राग परिचय :

इस राग में रिषभ, धैवत स्वर कोमल और शेष स्वर शुद्ध हैं।

थाट - भैरव

जाति - संपूर्ण

वादी :- धैवत

संवादी - रिषभ

गायन समय - प्रात:काल, पुष्टिमार्गमें प्रात: मंगलासमयके पद राग भैरवमें गाये जाते हैं।

वादी :- रागमें जिस स्वरकी प्राधान्यता रहती है। इसे रागका राजाभी कहते हैं।

संवादी :- रागका मंत्री जिसे वादी से थोडा कम महत्त्व दिया जाता है।

आरोह :- स्वरोंको नीचे से ऊपरकी और जाने को आरोह कहते हैं।

सा, रे, ग, म प, ध, नी, सां

अवरोह :- स्वरोंको ऊपरसे नीचे की और आने को अवरोह कहते हैं।

सां, नी, ध, प, म, ग, रे, सा.

पकड़ - थोडे से स्वरों के समूहसे ही रागका रूप सामने आता है।

सा, गमप, धप,गम, रे, सा

कीर्तन नं. १ :

श्री आचार्यजी श्री महाप्रभुजीको पद - राग-भैरव ताल : झपताल : मात्रा - १०

भोर ही श्री वल्लभ वल्लभ कहिये ।
आनंद परमानंद श्रीकृष्ण मुख, सुमरे सुमरे अष्ट सिद्धि पैये ।।१।।
और सुमरो श्री विठ्ठल गिरिधर, श्री गोविन्द द्विजवर भूप।।
श्री बालकृष्ण गोकुलपति रघुपति, यदुपति नव घनश्याम स्वरूप ।।२।।
पढो सुसार श्री वल्लभ वचनामृत, जपो अष्टाक्षर मंत्र करि नेम ।।
अन्य श्रवण कीर्तन तजि, निश दिन सुनो सुबोधिनी धरि जिय प्रेम।।३।।
और सदा सेवो श्री नंद यशुमति सुत, प्रेम भक्ति सहित जिय जान।।
अन्याश्रय असमर्पित लेनो, असदालाप असत्संग ही हानि।।४।।
नयनन निरखौ श्री कालिन्दी, और निरखो सुखद व्रजधाम।।
यह संपत्ति वल्लभतें पैये, रसिकनको नहीं औरसों काम ।।५।।

स्थायी (यह अधिकतर नीचेके स्वरोंमें गायी जाता है।)

X		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	ग	म
भो	-	र	ही	श्री	व	-	ल्ल	-	भ
ध	ध	ध	म	ध	नी	नी	सां	सां	सां
व	-	ल्ल	-	भ	क	हि	ये	-	-
ध	सां	नी	ध	प	प	ध	प	ग	म
भो	-	र	ही	श्री	व	-	ल्ल	-	भ
प	ध	प	ग	म	रे	रे	सा	सा	सा
व	-	ल्ल	-	भ	क	हि	ये	-	-

अन्तरा (यह अधिकतर ऊपरके स्वरोंमें गाया जाता है।)

X		२			०		३		
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
आ	-	नं	-	द	प	र	मा	-	-
रें̲	रें̲	रें̲	सां	रें̲	गं	रें̲	सां	सां	सां
नं	द	श्री	-	-	कृ	ष्ण	मु	-	ख
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
सु	म	रे	-	-	सु	म	रे	-	-
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
अ	ष्ट	सि	-	द्धि	पै	-	ये	-	-

स्थायी

X		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	ग	म
ओ	र	सु	-	म	रो	-	श्री	-	-
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
वि	-	ठ्ठ	-	ल	गि	रि	ध	-	र
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
श्री	-	गो	-	-	वि	-	न्द	-	-
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
द्वि	ज	व	-	र	भू	-	प	-	-

अन्तरा

X		२			०		३		
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
श्री	-	बा	-	ल	कृ	-	ष्ण	-	गो
रें̲	रें̲	रें̲	सां	रें̲	गं	रें̲	सां	सां	सां
कु	ल	प	-	ति	र	घु	प	-	ति

X		२			०		३		
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
य	दु	प	-	ति	न	व	घ	-	न
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
श्या	-	म	-	स्व	रू	-	प	-	-

स्थायी

X		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	ग	म
प	-	ढो	-	सु	सा	-	र	-	श्री
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
व	ल्ल	भ	व	च	ना	-	मृ	-	त
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
ज	पो	अ	-	-	ष्टा	-	क्ष	-	र
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
मं	त्र	क	-	रि	ने	-	-	-	म

अन्तरा

X		२			०		३		
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
अ	-	न्य	-	श्र	व	ण	की	-	र
रें̲	रें̲	रें̲	सां	रें̲	गं	रें̲	सां	सां	सां
त	न	त	-	जि	नि	श	दि	-	न
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
सु	नो	-	सु	-	बो	-	धि	-	नि
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
ध	रि	जि	य	-	प्रे	-	-	-	म

स्थायी

X		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	ग	म
औ	-	र	-	स	दा	-	से	-	वो
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
नं	द	य	-	शु	म	ति	सु	-	त
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
प्रे	-	म	-	-	भ	-	क्ति	-	स
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
हि	त	जि	-	य	जा	-	-	-	न

अन्तरा

X		२			०		३		
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
अ	-	न्या	-	-	श्र	य	अ	-	स
रें̲	रें̲	रें̲	सां	रें̲	गं	रें̲	सां	सां	सां
म	र	पि	-	त	ले	-	नो	-	-
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
अ	स	दा	-	-	ला	-	प	-	अ
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
स	त	सं	ग	हि	हा	-	नि	-	-

स्थायी

X		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	ग	म
न	य	न	-	न	नि	र	खौ	-	-
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
श्री	-	का	-	-	लिं	-	दी	-	-
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
औ	र	नि	-	र	खो	-	-	-	सु
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
ख	द	व्र	-	ज	धा	-	-	-	म

अन्तरा

X		२			०		३		
ध̲	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	सां
य	ह	सं	-	-	प	ति	श्री	-	-
रें̲	रें̲	रें̲	सां	रें̲	गं	रें̲	सां	सां	सां
व	ल्ल	भ	तें	-	पै	-	ये	-	-
ध̲	सां	नी	ध̲	प	प	ध̲	प	ग	म
र	सि	क	-	न	को	-	न	-	हिं
प	ध̲	प	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा	सा
औ	-	र	-	सो	का	-	-	-	म

इसी स्वरलीपिमें निम्नलिखित पद आप गा सकते हैं।

कीर्तन नं. २

श्री गुसांईजीको पद - राग भैरव - ताल झपताल - मात्रा - १०

श्री गोकुलगामको पेंडो ही न्यारो ।।
मंगलरूप सदा सुखदायक, देखियत तीन लोक उजियारो ।।१ ।।
जहां वल्लभसुत निर्भय बिराजत, भक्तजनके प्राणनप्यारो।।
माधोदास बल बल प्रतापबल, श्री विठ्ठल सर्वस्व हमारो ।।२ ।।

कीर्तन नं. ३

श्री यमुनाजीको पद - राग भैरव - ताल - तीनताल : मात्रा - १६

श्री यमुनाजी तिहारो दरस मोहि भावे ।।
श्री गोकुलके निकट बहत हो, लहरनकी छबि आवे ।।१ ।।
दु:ख हरनी सुख करनी श्री यमुनाजी, जे जन प्रात उठ न्हावे ।।
मदनमोहनजुकी खरीहो पियारी. पटरानीजु कहावे।।२ ।।
वृन्दावनमें रास रच्यो है. मोहन मुरली बजावे ।।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकू, वेद विमल जस गावे ।।३ ।।

मुखड़ा

२				०				३				X			
ग	म	प	प	प	ध	प	म	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	सा
य	मु	ना	जी	ति	हा	रो	द	र	स	मो	हि	भा	-	वे	श्री

अन्तरा

०				३				X				२			
ध॒	ध॒	म	ध॒	नी	नी	सां	सां	रें॒	रें॒	सां	रें॒	गं	रें॒	सां	सां
श्री	-	गो	-	कु	ल	के	-	नि	क	ट	ब	ह	त	हो	-
ध॒	सां	नी	ध॒	प	म	प	ध॒	सां	नी	ध॒	प	ग	म	प	प
ल	ह	र	न	की	-	छ	बि	आ	-	वे	श्री	य	मु	ना	जी

स्थायी

०				३				X				२			
सा	सा	ग	म	प	प	प	म	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नी	ध॒	प	प
दुः	ख	ह	र	नी	-	सु	ख	क	र	नी	श्री	य	मु	ना	जी
प	ध॒	प	म	ग	रे॒	ग	म	रे॒	रे॒	सा	सा	ग	म	प	प
जे	-	ज	न	प्रा	त	उ	ठ	न्हा	-	वे	-	-	-	-	-

अन्तरा

०				३				X				२			
ध॒	ध॒	म	ध॒	नी	नी	सां	सां	रें॒	रें॒	सां	रें॒	गं	रें॒	सां	सां
म	द	न	मो	ह	न	जु	की	ख	री	हो	पि	या	-	री	-
ध॒	सां	नी	ध॒	प	म	प	ध॒	सां	नी	ध॒	प	ग	म	प	प
प	ट	रा	-	नी	-	जु	क	हा	-	वे	श्री	य	मु	ना	जी

स्थायी

०				३				X				२			
सा	सा	ग	म	प	प	प	म	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नी	ध	प	प
वृं	-	दा	-	व	न	में	-	रा	-	स	र	च्यो	-	है	-
प	ध॒	प	म	ग	रे॒	ग	म	ग	रे॒	सा	सा	ग	म	प	प
मो	-	ह	न	मु	र	ली	ब	जा	-	वे	श्री	-	-	-	-

स्थायी

०				३				X				२			
ध	ध	म	ध	नी	नी	सां	सां	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	सां
सू	-	र	दा	-	स	प्र	भु	ति	हा	रे	मि	ल	न	कू	-
ध	सां	नी	ध	प	म	प	ध	सां	नी	ध	प	ग	म	प	प
वे	-	द	वि	म	ल	ज	स	गा	-	वे	श्री	य	मु	ना	जी

इसी स्वरलीपिमें निम्नलिखित पद आप गा सकतें हैं।

कीर्तन नं. ४

जगायवेको पद - राग भैरव - ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

लालन जागोहो भयो भोर ।।
दूध दही पकवान मिठाई, लीजे माखन रोटी बोर ।।१।।
विकसे कमल विमल वाणी सब, बोलन लागे पंछी चहुं और ।।
रसिकप्रीतमसों कहत नंदरानी, उठ बैठोहो नंदकिशोर ।।२।।

कीर्तन नं. ५

रासको पद - राग भैरव - ताल - आदिताल : मात्रा - ८

मान लाग्यो गिरिधर गावे ।।
तत थेई तत थेई तत ता थेई थेई, भैरो राग मिल मुरली बजावे ।।१।।
नाचत नव वृषभान दुलारी, अवघर गतिमे गति उपजावे।
गिरिधर पियप्यारीकी पद रज, कृष्णदास लै शीश चढावे ।।२।।

मुखडा

३				X				२				०			
ग	म	प	प	ध॒	-	पम	ग	ग	रे॒	गम	पम	रे॒	-	सा	-
मा	-	-	न	ला	-	ग्यो	-	गि	री	ध-	र-	गा	-	वे	-

अन्तरा

३				X				२				०			
ध॒	ध॒	प	ध॒	सां	सां	रें॒	सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	गं	रें॒	सां	सां
त	त	थे	ई	त	त	थे	ई	त	त	ता	-	थे	ई	थे	ई
नी	सां	नी	सां	ध॒	ध॒	प	म	ग	रे॒	गमप	म	रे॒	-	सा	-
भै	-	रो	-	रा	ग	मि	ल	मु	र	ली-	ब	जा	-	वे	-

स्थायी

३				X				२				०			
म	-	ग	म	प	प	प	प	ध॒	-	ध॒	ध॒	नी	ध॒	प	प
ना	-	च	त	न	व	वृ	ष	भा	-	न	दु	ला	-	री	-
म	म	म	म	म	म	म	म	ग	रे॒	गम	पम	रे॒	-	सा	-
अ	व	घ	र	ग	ति	में	-	ग	ति	उ-	-प	जा	-	वे	-

अन्तरा

३				X				२				०			
ध॒	ध॒	प	ध॒	सां	सां	रें॒	सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	गं	रें॒	सां	सां
गि	री	ध	र	पि	य	प्या	-	री	-	की	-	प	द	र	ज
नी	सां	नी	सां	ध॒	ध॒	प	प	ग	रे॒	गम	पम	रे॒	-	सा	-
कृ	-	ष्ण	दा	-	स	ले	-	शी	-	श-	च-	ढा	-	वे	-

कीर्तन नं. ६

श्री आचार्यजी कौ पद - राग भैरव - ताल - तीनताल : मात्रा - १६

गाउ श्री विल्लभ ध्याउं श्री वल्लभ, श्री वल्लभचरणरज तन लपटाउं ।।
वल्लभ संतति नित्यप्रति निरखूं, वल्लभदासन दास कहाऊं ।।१।।
कृष्णलीला सेवा नित्य करके, जगत सबे तृण तुल्य धराउं ।।
व्यासदासकी यही प्रतिज्ञा, श्री गोविंदकृपाते पाउं ।।२।।

मुखड़ा

X				२				०				३			
ग	म	प	प	ध	-	पम	ग	ग	रे	गमप	म	रे	-	सा	सा
गा	-	उ	श्री	व	-	ल्ल	भ	ध्या	-	उ–	श्री	व	-	ल्ल	भ
म	-	गम	पप	ध	ध	ध	-पमग	ग	रे	गम	पम	रे	-	सा	-
श्री	-	व-	ल्लभ	च	र	ण	-रज-	त	न	ल- -	प	टा	-	उ	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध	-	प	ध	सां	-	सां	सां	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	-
व	-	ल्ल	भ	सं	-	त	ति	नि	त्य	प्र	ति	नि	र	खु	-
नी	सां	नी	सां	ध	-	पम	ग	ग	रे	गम	प	म	रे	-	सा
व	-	ल्ल	भ	दा	-	स-	न	दा	-	स	-	क	हा	-	उ

स्थायी

X				२				०				३			
म	-	ग	-	पप	-	-	-	प	ध	-	ध	ध	नी	ध	प
कृ	-	ष्ण	-	ली	ला	-	-	से	वा	-	नि	त्य	क	र	के
म	म	म	म	म	म	म	म	-	ग	रे	गमप	म	रे	-	सा
ज	ग	त	स	बे	-	तृण		-	तु	ल्य	-	ध	रा	-	उ

अन्तरा

X				२				०				३			
ध	-	प	ध	सां	सां	सां	सां	रें	-	रें	रें	गं	रें	सां	-
व्या	-	स	दा	-	स	की	-	य	-	ही	प्र	ति	-	ज्ञा	-
सां	नी	सां	नी	सां	ध	-	-	प	म	ग	-	ग	रे	गमपम	रेसा
श्री	गो	वीं	द	कृ	पा	-	-	ते	-	-	-	पा	-	—-	उ-

७.२ राग रामकली

''भैरव के ही मेलमें, म - नि दोऊ रूप लखाय ।
रि - ध कोमल, संवाद प - स, रामकली बन जाय ।।''

राग रामकली का साधारण स्वरूप भैरव राग के समान है। भैरव राग से बचनेके लिये राग रामकलीका विस्तार मध्य और तार स्थानमें होना चाहिए। राग रामकलीमें तीव्र म और कोमल नी का प्रयोग एक अनूठे ढंगसे होता है। म॑पधनीधप, गमरेसा इस प्रकारकी तानें इस रागकी रोचकता बढ़ाती हैं।

राग परिचय :

रिषभ और धैवत स्वर कोमल, दोनों मध्यम, दोनों निषाद और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं।

थाट : भैरव

जाति : संपूर्ण

वादी : पंचम

संवादी : षड़ज

गायन समय : प्रात: काल

आरोह : सा, गमप, धनीसां

अवरोह : सांनीधप, म॑पधनीधप, गमरेसा

पकड़ : धपम॑प, धनीधप, गमरेसा

कीर्तन नं. ७

जगायवेको पद - राग रामकली - ताल - त्रिताल : मात्रा - १६

जागो मेरे लाल जगत उजियारे।।
कोटि मदन वारों मुसकनि पर, कमल नयन नयननके तारे ।।१।।
संग लेहो ग्वाल - बाल और बच्छ सब, यमुनाके तीर जिन जाओ मेरे प्यारे।।
परमानंद कहत नंदरानी, दूरजिन जाओ मेरे ब्रजरखवारे ।।२।।

मुखडा

X				२				०				३			
ग	म	प	नी̲	ध̲	प	म॑	प	ग	म	प	म	ग	रे̲	सा	सा
जा	गो	मे	रे	ला	-	ल	ज	ग	त	उ	जि	या	-	रे	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां	रें̲	रें̲	सां	रें̲	गं	रें̲	सां	सां
को	-	टि	म	द	न	वा	-	रो	-	मु	स	क	नि	प	र
ध̲	सां	नी	ध̲	प	म॑	प	ध̲	नी̲	ध̲	प	म	ग	रे̲	सा	सा
क	म	ल	न	य	न	न	य	न	न	के	-	ता	-	रे	-

स्थायी

X				२				०				३			
म	म	ग	म	प	प	प	म	ध̲	ध̲	ध̲	ध̲	नी̲	ध̲	प	प
सं	ग	ले	-	हो	-	ग्वा	ल	बा	ल	औ	र	ब	च्छ	स	ब
प	ध̲	प	म	ग	रे̲	ग	म	प	म	ग	म	रे̲	रे̲	सा	सा
य	मु	ना	के	ती	र	जि	न	जा	ओ	मे	रे	प्या	-	रे	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध	ध	म	ध	नी	नी	सां	सां	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	सां
प	र	मा	-	नं	-	न्द	क	ह	त	नं	द	रा	-	नी	-
ध	सां	नी	ध	प	म	प	ध	नी	ध	प	म	ग	रे	सा	सा
दु	र	जि	न	जा	ओ	मे	रे	ब्र	ज	र	ख	वा	-	रे	-

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हैं ।

कीर्तन नं. ८

मुरली को पद - राग रामकली : ताल - त्रिताल मात्रा - १६

मुरलीकौ मन हरिसों मान्यो।।
हरिकौ मन मुरलीसों मिलि गयौ जैसें पय अरु पान्यौ ।।१ ।।
जैसें चोर चोर सों, तैसौ ठग ठग एकै जान ।।
कुटिल कुटिल मिल चले एक व्है, दुहुन बनी पहिचान।।२ ।।
ये बन बन नित धेंनु चरावत, वह बनही की आहि।।
सुर गढ़ी बिधना जोड़ीको, जैसी तैसी ताहि।।३ ।।

कीर्तन नं. ९

श्री यमुनाजी को पद - राग रामकली : ताल - झपताल मात्रा - १०

पिय संग रंग भरि करि कलोलें ।।
सबनको सुख देन, पिय संग करत सेन, चित्तमें तब परत चेन जबही बोले ।।१ ।।
अति हि विख्यात, सब बात इनके हाथ, नाम लेत ही कृपा करत अतोलें ।।
दरस कर परस कर, ध्यान हियमें धरे,सदा व्रजनाथ इन संग डोले ।।२ ।।
अतिहि सुख करन दु:ख सबनके हरन, ये ही लीनो परन दे जु कोलें ।।
एसी श्री यमुने जान तुम करो गुनगान, ‘‘रसिक’’ प्रीतम पाये नग अमोलें ।।३ ।।

स्थायी

X		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	म॑	प
पि	य	सं	-	ग	रं	ग	भ	-	रि
ध॒	ध॒	ध॒	म	ध॒	नी	नी	सां	सां	सां
क	रि	क	लो	-	लें	-	-	-	-
ध॒	सां	नी	ध॒	प	म॑	प	ग	ग	म
पि	य	सं	-	ग	रं	ग	भ	-	रि
नी॒	ध॒	प	ग	म	रे॒	रे॒	सा	सा	सा
क	रि	क	लो	-	लें	-	-	-	-

अन्तरा

X		२			०		३		
ध॒	ध॒	ध॒	म	ध॒	नी	नी	सां	सां	सां
स	ब	न	को	-	सु	ख	दे	-	न
रें॒	रें॒	रें॒	सां	रें॒	गं	रें॒	सां	सां	सां
पि	य	सं	ग	क	र	त	से	-	न
ध॒	सां	नी	ध॒	प	म॑	प	ग	ग	म
चि	त्त	में	त	ब	प	र	त	चे	न
नी॒	ध॒	प	ग	म	रे॒	रे॒	सा	सा	सा
ज	ब	ही	बो	-	ले	-	-	-	-

स्थायी

×		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	म॑	प
अ	ति	ही	-	वि	ख्या	-	त	स	ब
ध॒	ध॒	ध॒	म	ध॒	नी	नी	सां	सां	सां
बा	-	त	इ	न	के	-	हा	-	थ
ध॒	सां	नी	ध॒	प	म॑	प	ग	ग	म
ना	-	म	ले	-	त	ही	कृ	पा	-
नी॒	ध॒	प	ग	म	रे॒	रे॒	सा	सा	सा
क	र	त	-	अ	तो	-	लें	-	-

अन्तरा

×		२			०		३		
ध॒	ध॒	ध॒	म	ध॒	नी	नी	सां	सां	सां
द	र	स	क	र	प	र	स	क	र
रें॒	रें॒	रें॒	सां	रें॒	गं	रें॒	सां	सां	सां
ध्या	-	न	हि	य	में	-	ध	-	रे
ध॒	सां	नी	ध॒	प	म॑	प	ग	ग	म
स	दा	ब्र	-	ज	ना	थ	इ	-	न
नी॒	ध॒	प	ग	म	रे॒	रे॒	सा	सा	सा
सं	-	ग	-	-	डो	-	ले	-	-

स्थायी

x		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	म॑	प
अ	ति	ही	-	सु	ख	क	र	-	न
ध॒	ध॒	ध॒	म	ध॒	नी	नी	सां	सां	सां
दुः	ख	स	ब	न	के	-	ह	र	न
ध॒	सां	नी	ध॒	प	म॑	प	ग	ग	म
ये	-	ही	-	ली	नो	-	प	र	न
नी॒	ध॒	प	ग	म	रे॒	रे॒	सा	सा	सा
दे	-	जु	को	-	ले	-	-	-	-

अन्तरा

x		२			०		३		
ध॒	ध॒	ध॒	म	ध॒	नी	नी	सां	सां	सां
ऐ	सी	श्री	य	मु	ने	-	जा	-	न
रें॒	रें॒	रें॒	सां	रें॒	गं	रें॒	सां	सां	सां
तु	म	क	-	रो	गु	न	गा	-	न
ध॒	सां	नी	ध॒	प	म॑	प	ग	ग	म
र	सी	क	प्री	-	त	म	पा	-	ये
नी॒	ध॒	प	ग	म	रे॒	रे॒	सा	सा	सा
न	ग	अ	मो	-	ले	-	-	-	-

इसी स्वरलीपिमें निम्नलिखित पद की ही तरह, श्री यमुनाजींके ४१ पद भी गाये जा सकते हैं।

कीर्तन नं. १०

पलनाको पद - राग रामकली : ताल - झपताल, मात्रा - १०

गोकुलचंद पालनें झुलत ।।
हेरी हेरी व्रजराज झुलावत, किलकि किलकि देखि मन फुलत ।।१।।
माखन मिश्री मेलि चखावत, झुनझुना फेरि बजाय सुनावत ।।
द्वारकेश प्रभु हँसि मुसकाय, अंग पुलकि मन भावत ।।२।।

किर्तन नं. ११

व्रतचर्याको पद राग : रामकली : ताल - तीनताल : मात्रा - १६

मोहन देहो वसन हमारे ।
जाय कहो व्रजपति जुके आगे, करत अनीत ललारे ।।१।
तुम व्रज राजकुमार लाडिले, और सबहिन के प्राणपियारे।
गोविंदप्रभु प्रियदासी तिहारी, सुंदरवर सुकुमारे ।।२।।

मुखडा

३				X				२				०			
ग	म	प	प	ध॒	ध॒	प	प	म॑	प	ध॒	नी॒	ध॒	प	म	-
मो	-	ह	न	दे	-	हो	-	व	स	न	ह	मा	-	रे	-

अन्तरा

३				X				२				०			
ध॒	-	प	ध॒	सां	-	सां	सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	गं	रें॒	सां	सां
जा	-	य	क	हो	-	व्र	ज	प	ति	जु	के	आ	-	गे	-
नी	सां	नी	सां	ध॒	-	प	प	प	म॑	ध॒	नी॒	ध॒	प	म	-
क	र	त	अ	नी	-	त	ल	ला	-	-	-	रे	-	-	-

स्थायी

३				X				२				०			
म	म	ग	म	प	प	प	प	म॑	प	ध	नी	ध	प	म	म
तु	म	व्र	ज	रा	-	ज	कु	मा	-	र	ल	-	डी	ले	-
म	म	म	म	म	म	म	म	ग	रे	गम	प	म	रे	-	सा
औ	र	स	ब	ही	न	के	-	प्रा	-	ण	-	पि	या	-	रे

अन्तरा

३				X				२				०			
ध	-	प	ध	सां	सां	सां	सां	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	सां
गो	-	विं	द	प्र	भु	पि	य	दा	-	सी	ति	हा	-	री	-
नी	सां	नी	सां	ध	ध	प	प	म॑	प	ध	नी	ध	प	म	म
सुं	-	द	र	व	र	सु	कु	मा	-	-	-	रे	-	-	-

कीर्तन नं. १२

पलनाको पद - राग रामकली : ताल - झपताल : मात्रा - १०

नंदको लाल व्रज पालने झूले ।
कुटिल अलकावलि तिलक गोरोचना, चरण अंगुष्ठ मुख किलकि फूले ।।१।।
नैन अंजन रेख भेख अभिराम सुठि, कंठ के हरि नख किंकिणी कटि मूले।
नंददासनि नाथ नंदनंदन कुंवर, निरखि नागरि देह गेह भूले ।।२।।

मुखड़ा

X		२			०		३		
सां	सां	सां	रें̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	प	प
नं	-	द	को	-	ला	-	ल	व्रज	
म॑	प	ध̲	नी̲	ध̲	ग	म	रे̲	सा	सा
पा	-	ल	ने	-	झु	-	ले	-	-

अन्तरा

X		२			०		३		
ध̲	ध̲	ध̲	प	ध̲	सां	सां	रें̲	सां	सां
कु	टि	ल	अ	ल	का	-	व	ली	-
रें̲	रें̲	रें̲	रें̲	सां	रें̲	गं	रें̲	सां	सां
ति	ल	क	गो	-	रो	-	य	ना	-
सां	सां	सां	रें̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	प	प
च	र	न	अं	-	गु	-	ष्ठ	मु	ख
म॑	प	ध̲	नी̲	ध̲	ग	म	रे̲	सा	सा
कि	ल	क	फू	-	ले	-	-	-	-

स्थायी

X		२			०		३		
सां	सां	सां	रें̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	प	प
न	य	न	अं	-	ज	न	रे	-	ख
म॑	म॑	प	ध̲	नी̲	ध̲	प	म	रे̲	सा
थे	-	ख	अ	भि	रा	-	म	सू	ठि
म	म	म	म	म	प	प	ध̲	म॑	प
कं	-	ठ	के	-	ह	री	न	-	ख
सां	सां	सां	रें̲	सां	ध̲	नी̲	ध̲	प	प
किं	की	णी	क	टी	मू	-	ले	-	-

अन्तरा

X		२			०		३		
ध̲	ध̲	ध̲	प	ध̲	सां	सां	रें̲	सां	सां
नं	-	द	दा	-	स	नी	ना	-	थ
रें̲	रें̲	रें̲	रें̲	रें̲	रें̲	गं	रें̲	सां	सां
नं	-	द	नं	-	द	न	कुं	व	र
सां	सां	सां	सां	सां	ध̲	नी̲	ध̲	प	प
नि	र	ख	ना	-	ग	री	दे	-	ह
म॑	प	ध̲	नी̲	ध̲	ग	म	रे̲	सा	सा
गे	-	ह	भू	-	ले	-	-	-	-

७.३ राग विभास

''म-नी स्वर वर्जित किये, औडव राग विभास ।
वादी ध संवादी रे, गायन समय प्रभात।।''

राग विभास प्राचीन एवं प्रचलित राग है। विभिन्न मतोंके अनुसार राग विभासके चार स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं। १. बिलावल २. भैरव ३. मारवा तथा ४ पूर्वी थाटोत्पन्न । पूर्वी तथा मारवा थाट के राग विभास का प्रचार अल्प प्रमाण में होने से ये दोनों प्रकार अप्रचलित से हो गये हैं। आजकल भैरव थाट का राग विभास विशेष रूपसे प्रचारमें है। यहाँ शास्त्रीय संगीतमें रे̲, ध̲ स्वर कोमल लेते है जबकि पुष्टिभक्ति संगीतमें रे - ध स्वर शुद्ध होने के कारण इस राग को बिलावल थाटोत्पन्न मानना उचित होगा । शुद्ध विभास से मिलते - झुलते राग हैं भूपाली और देशकार । राग भूपाली बिलावल थाटका पूर्वान्गप्रधान सायंकालीन राग है जबकि राग विभास उत्तरांगप्रधान प्रात:कालीन राग है। राग भूपाली के वादी - संवादी स्वर ध - ग हैं और राग विभासके वादी -संवादी स्वर ध - रे हैं। राग देशकार भी औड़व जातिका राग है जिसके वादी - संवादी ध - ग स्वर हैं। उसका गायन समय दिन का प्रथम प्रहर है और कई गुणीजन इस रागमें रे पर कंपन भी लाते हैं। इस प्रकार इन रागोंमें भेद समझकर उनको एक-दूसरेसे बचाकर गाना उचित होगा ।

जिन रागोंमें म - नि स्वर वर्जित होते हैं उनमें ग-प की स्वर संगति कर्णप्रिय मालूम होती है।

राग परिचय -

इसमें म - नी वर्जित, शेष स्वर शुद्ध हैं।

थाट - बिलावल

जाति - औड़वं

वादी - ध

संवादी - रे

गायन समय : प्रात:काल। इस रागकी प्रकृति शीतल और शांत होने से फाल्गुन से ज्येष्ठ मास तक गाया जाता है। प्राय: मंगला आरती, खंडिता, कलेऊ जैसे पद इस रागमें पाये जाते हैं।

आरोह : सा, रे, ग, प, ध, प, सां

अवरोह : सांधप, गपधप, गरेसा

पकड़ : सा ध प, गपधप, गरेसाध़सारेग, रेसा

स्वर विस्तार : सारेग, प, ध, पधसां, सांसांरें,
सांरेंगं, रेंसां, सां, धप, गपध,प, गरे, सा, ध़सारेग, रेसा ।

कीर्तन नं. १३

मंगला आरती को पद - राग विभास : ताल - त्रिताल, मात्रा - १६

मंगल आरती गोपालकी माईरी।।
नित्य प्रति मंगल होत निरख मुख, चितवन नयन विशाल की माई ।।१।।
मंगल रूप श्याम सुन्दर को, मंगल भृकुटि सुभालकी माई ।।
चतुर्भुज प्रभु सदा मंगल़ निधि, बानिक गिरिधर लालकी माई ।।२।।

मुखडा

X				२				०				३			
ग	प	ध	प	ध	प	ग	ग	रे	रे	सा	रे	ग	रे	सा	सा
मं	ग	ल	आ	-	र	ती	गो	पा	-	ल	की	मा	ई	री	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ग	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
नि	त्य	प्र	ति	मं	-	ग	ल	हो	-	त	नि	र	ख	मु	ख
सां	रें	सां	सां	ध	ध	प	प	ग	रे	सा	रे	ग	रे	सा	सा
चि	त	व	न	न	य	न	वि	शा	-	ल	की	मा	ई	री	-

स्थायी

X				२				०				३			
ग	ग	प	प	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	प	ध	ध	प	प
मं	-	ग	ल	रू	-	प	श्या	-	म	सुं	-	द	र	को	-
प	ग	ग	ग	रे	रे	रे	रे	रे	सा	रे	रे	ग	रे	सा	सा
मं	-	ग	ल	भृ	कु	टि	सु	भा	-	-	ल	की	-	मा	ई

अन्तरा

X				२				०				३			
ग	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
च	तु	र्भु	ज	प्र	भु	-	स	दा	-	मं	-	ग	ल	नि	धि
सां	रें	सां	सां	ध	ध	प	ग	ग	रे	सा	रे	ग	रे	सा	सा
बा	-	नि	क	गि	रि	ध	र	ला	-	-	ल	की	-	मा	ई

इसी स्वरलीपिमें निम्नलिखित पद आप गा सकते हैं।

कीर्तन नं १४

श्री गोकुलनाथजीकी बधाई - राग विभास : ताल - त्रिताल, मात्रा - १६

आयो आयो आनंद रंगरंग, सुन्यो रुक्मिनी सुत जायो ।।
जुवतिनके मन में वेहेरहे, हँसि हँसि मंगल गायो ।।१।।
सब सुरति संग लगायो प्रफुल्लित मुख निरखि हीये,
हाव भाव कटाक्ष कीयो मनको भायो ।।
वृन्दावनचंद श्री वल्लभ रसहि रसमें, काम अनेक लाड लड़ायो ।।२।।

कीर्तन नं. १५

कलेऊ का पद – राग विभास : ताल - त्रिताल, मात्रा - १६

गोविंद मांगत है दधि रोटि ।।
माखन सहित देहु मेरी जननी, शुभ्र सुकोमल मोटी ।।१।।
जो कछु मांगोसो देहु मोहन, काहेको आंगन लोटी ।।
कर गहि उछंग लेत महतारी, हाथ फिरावत चोटी ।।२।।
मदनगोपाल श्यामघनसुन्दर, छांडो यह मति खोटी ।।
परमानंददासको ठाकुर, हाथ लकुटिया छोटी ।।३।।

मुखडा

X				२				०				३			
सा	सा	ध	प	ध	ध	प	प	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा
गो	-	विं	द	मां	-	ग	त	हैं	-	द	धि	रो	-	टि	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ग	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
मा	-	ख	न	स	हि	त	दे	-	हु	मे	री	ज	न	नी	-
प	प	गं	रें	सां	सां	ध	प	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा
शु	-	भ्र	सु	को	-	म	ल	मो	-	-	-	टी	-	-	-

स्थायी

X				२				०				३			
सा	सा	ध	प	ध	ध	प	प	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा
जो	-	क	छु	मां	-	गो	सो	दे	-	हु	-	मो	-	ह	न
ग	प	ध	प	ग	ग	रे	रे	सा	ध़	सा	रे	ग	रे	सा	सा
का	-	हे	को	आं	-	ग	न	लो	-	-	-	टी	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ग	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
क	र	ग	हि	उ	छं	ग	ले	-	त	म	ह	ता	-	री	-
प	प	गं	रें	सां	सां	ध	प	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा
हा	-	थ	फि	रा	-	व	त	चो	-	-	-	टी	-	-	-

स्थायी

X				२				०				३			
सा	सा	ध	प	ध	ध	प	प	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा
म	द	न	गो	पा	-	ल	श्या	-	म	घ	न	सुं	-	द	र
ग	प	ध	प	ग	ग	रे	रे	सा	ध़	सा	रे	ग	रे	सा	सा
छां	-	डो	-	य	ह	म	ति	खो	-	-	-	टी	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ग	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
प	र	मा	-	नं	-	द	दा	-	स	को	-	ठा	-	कु	र
प	प	गं	रें	सां	सां	ध	प	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा
हा	-	थ	ल	कु	टि	या	-	छो	-	-	-	टी	-	-	-

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते है।

कीर्तन नं. १६

गंगा दसमी को पद - राग विभास : ताल - त्रिताल, मात्रा - १६

जे जन गंगा गंगा कहे ।।
जन्म जन्मके कोटिक दुष्कृत, छिनहीं मांझ दहे ।।१।।
स्नान करत तें मन वांछित फल, ततछिन सर्व लहे ।।
व्रजपतिकी प्यारी संगमते, बहुसुख देन चहे ।।२।।

किर्तन नं. १७

उष्णकाल खंडितानुं पद - राग विभास - ताल - चौताल : मात्रा - १२

ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढरक रही
ढयेसेही फिरत ऐसे कौनपे जु ठयेहो।
गाढे तो ह्थिके पिय ऐसी गाढी कौन त्रिय, गाढे गाढे कुचन बीच गाढे कर गहेहो ।।१।।
लाललाल लोचनमें उनीदे लाग लागजात, सांचीकहो प्राणपति में तो लाल लहेहो ।
नंददास प्रभु पिय निशके उनीदे आये, भयो प्रात कहो बात रात कहां रहेहो ।।२।।

X		०		२		०		३		४	
सां	-	सां	रें॒	-	सां	ध॒	-	ध॒	प	प	प
ढी	-	ले	ढी	-	ले	प	-	ग	ध	र	त
ग	प	ध॒	ध॒	प	प	गप	गप	ग	रे॒	-	सा
ढी	-	ली	पा	-	ग	ढ-	र-	क	र	-	ही
प	-	प	प	ग	प	ध॒	ध॒	ध॒	प	-	प
ढ	-	ये	से	-	ही	फि	र	त	अै	-	से
सां	-	सां	ध॒	प	प	गप	गप	ग	ग	रे॒	सा
कौ	-	न	पे	-	जु	ठ-	ये-	-	-	हो	-

अन्तरा

X		०		२		०		३		४	
ध॒	-	ध॒	प	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	रें॒	-	सां
गा	-	ढे	तो	-	-	हि	य	के	पि	-	य
रें॒	-	रें॒	रें॒	-	रें॒	सां	रें॒गं	रें॒	सां	-	सां
अे	-	सी	गा	-	ढी	कौ	--	न	त्रि	-	य
सां	-	सां	सां	-	सां	ध॒	ध॒	ध॒	प	-	प
गा	-	ढ	गा	-	ढ	भु	ज	न	बी	-	च
सां	-	सां	ध॒	-	प	गप	गप	ग	रे॒	रे॒	सा
गा	-	ढे	क	-	र	ग-	–	हे	-	हो	-

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
सां	-	सां	रें	सां	सां	ध	-	प	प	-	प
ला	-	ल	ला	-	ल	लो	-	य	न	-	में
ग	ग	प	ध	प	प	गप	गप	ग	रे	सा	सा
उ	नी	हे	ला	-	ग	ला	—	ग	जा	-	त
प	-	प	प	ग	प	ध	-	ध	प	-	ध
सां	-	ची	क	-	हो	प्रा	-	ळ	प	-	ति
सां	-	सां	ध	प	प	गप	गप	ग	रे	सा	सा
में	-	तो	ला	-	ल	ल -	- -	हे	-	हो	-

अन्तरा

X		०		२		०		३		४	
ध	-	ध	ध	प	ध	सां	-	सां	रें	सां	सां
नं	-	द	दा	-	स	प्र	-	भु	पि	-	य
रें	-	रें	रें	रें	रें	सां	रेंगं	रें	सां	-	सां
नी	-	श	के	-	उ	नी	-	दे	आ	-	ये
सां	-	सां	सां	-	सां	ध	-	ध	प	प	प
भ	-	यो	प्रा	-	त	क	-	हो	बा	-	त
सां	सां	सां	ध	प	प	गप	गप	ग	ग	रे	सा
रा	-	त	क	-	हां	र -	- -	हे	-	हो	-

किर्तन नं. १८

उष्णकाल मंगलादर्शन को पद - राग : बिभास - ताल - आदिताल : मात्रा - ८

प्रातसमे नवकुंज द्वार व्है, ललिता ललित बजाई बीना ।
पोढे सुनत श्याम श्रीश्यामा, दंपति चतुर नवीन नवीना ।।१।।
अति अनुराग सुहाग भरे दोउ, कोक कला जु प्रवीन प्रवीना ।
चतुर्भुजदास निरख दंपति सुख, तन मन धन न्योछावर कीना ।।२।।

X		२		०		३		X		२		०		३	
सां	सां	सां	सां	ध̲	ध̲	प	प	ग	प	ध̲	प	ग	रे̲	सा	-
प्रा:	-	त	स	मे	-	न	व	कुं	-	ज	-	द्वा	र	व्हैं	-
प	प	ग	प	ध̲	ध̲	प	प	ग	प	ध̲	प	ग	-	रे̲	सा
ललि		ता	-	ललि		तब		जा	-	ई	-	बी	-	ना	-

अन्तरा

X		२		०		३		X		२		०		३	
ध̲	ध̲	प	ध̲	सां	सां	रें̲	रें̲	रें̲	रें̲	गं	-	गं	रें̲	सां	सां
पो	-	ठे	सू	न	त	श्या	-	म	श्री	-	श्या	-	-	मा	-
सां	-	सां	सां	ध̲	ध̲	प	प	ग	प	ध̲	प	गप	ग	रे	सा
दं	-	प	ति	च	तु	र	न	वी	-	न	न	वी-		ना	-

स्थायी

X		२		०		३		X		२		०		३	
सां	-	सां	सां	ध̲	-	पप		ग	प	ध̲	प	ग	रे̲	सा	सा
अ	ति	अ	नु	रा	-	ग	सु	हा	-	ग	भ	रे	-	दो	उ
प	-	प	-	प	ध̲	-	प	प	ग	प	ध̲	प	ग	रे̲	सा
को	-	क	-	क	ला	-	जु	प्र	वी	-	न	प्र	वी	-	ना

अन्तरा

X		२		०		३		X		२		०		३	
ध	ध	प	ध	सां	-	सां	सां	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	सां
च	त्र	भु	ज	दा	-	स	नि	र	ख	दं	-	प	ति	सु	ख
सां	सां	सां	सां	ध	ध	प	-	ग	प	ध	प	गप	ग	रे	सा
त	न	म	न	ध	न	न्यो	-	छा	-	व	र	की –		ना	-

७.४ राग बिलावल या अल्हैया बिलावल

''आरोहन मध्यम नहीं, ध - ग संवाद बखान।
उतरत कोमल नी लखै, ताहि अल्हैया जान।।''

राग अल्हैया बिलावलकी उत्पत्ति राग बिलावलसे ही हुई है। अवरोहमें कोमल निषाद का प्रयोग इस रागके सौंदर्यको बढ़ाता है। गांधार, निषाद स्वर वक्र हैं।

राग परिचय -

थाट - बिलावल

जाति - षाडव - संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गांधार

गायन समय: प्रात:काल

पुष्टिभक्ति संगीतमें यह राग प्राय: श्रृंगार सन्मुख गाया जाता है ।

आरोह :- सा, गरेगप, ध, नी, सां

अवरोह :- सांनीधप, धनीधप, मगमरेसा

पकड़ :- सा, गरेगप, धनीसां

कीर्तन नं. १९ :

श्रृंगारको पद : राग बिलावल : ताल -त्रिताल, मात्रा - १६

लटपटी पाग के पेच सम्हारो ।।

कर दर्पनले निरख बारनें, सुंदर बदन निहारो ।।१।।

रंग भीने मुसकान मनोहर, नेह कहा निरवारो ।।

सूरदास प्रभु सब सुख दाता, चितते नेक न टारो ।।२।।

स्थायी

X				२				०				३			
ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	प	ध	ग	रे	ग	प	ध	नी
ल	ट	प	टी	पा	-	ग	के	पे	-	च	स	म्हा	-	रो	-
सां	सां	सां	सां	नी	सां	ध	प	ग	रे	गम	प	ग	म	रे	सा
ल	ट	प	टी	पा	-	ग	के	पे	च	-	स	म्हा	-	रो	-

अन्तरा

X				२				०				३			
गं	गं	गं	रें	गं	रें	सां	सां	सां	सां	नी	ध	नी	रें	सां	सां
क	र	द	र	प	न	लें	-	नि	र	ख	बा	-	र	ने	-
ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	प	ध	ग	रे	ग	प	ध	नी
सु	-न्द	र	ब	द	न	नि	हा	-	-	-	रो	-	-	-	

लटपटी .....

स्थायी

X				२				०				३			
ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	प	ध	ग	रे	ग	प	ध	नी
रं	ग	भी	-	नें	-	मु	स	का	-	न	म	नो	-	ह	र
सां	सां	सां	सां	नी	सां	ध	प	ग	रे	गम	प	ग	म	रे	सा
ने	-	ह	क	हा	-	नि	र	वा	-	-	-	रो	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
गं	गं	गं	रें	गं	रें	सां	सां	सां	सां	नी	ध	नी	रें	सां	सां
सू	-	र	दा	-	स	प्र	भु	स	ब	सु	ख	दा	-	ता	-
ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	प	ध	ग	रे	ग	प	ध	नी
चि	त	ते	-	ने	-	क	न	टा	-	-	-	रो	-	-	-

लटपटी .....

इस स्वरलीपिमें निम्नलिखित पद आप गा सकते हैं।

कीर्तन नं. २०

शृंगार सन्मुख को पद : राग बिलावल : ताल - त्रिताल, मात्रा - १६

नंदभुवनको भूषण माई।।
यशोदाको लाल वीर हलधरको, राधा रमन सदासुखदाई ।।१ ।।
इंद्र को इंद्र देवदेवन को, ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ।।
काल को काल ईश ईशनको, वरण को वरण महावरदाई ।।२ ।।
शिवको धन संतनको सर्वस्व, महिमा वेद पुराणन गाई।।
नंददासको जीवन गिरिधर, गोकुल मंडन कुँवर कन्हाई ।।३ ।।

कीर्तन नं. २१

शृंगार सन्मुख को पद : राग बिलावल : ताल - एकताल, मात्रा - १२

आज और काल्ह और दिनप्रति और और देखिये रसिक श्री गिरिराजधरन माई।।
छिनप्रतिनई छबि बरनें सो कौन कवि, नित्यही शृंगार बागो बरण बरण माई ।।१ ।।
शोभा सिंधु अंग अंग मोहीत कोटि अनंग, छबिकी उठत तरंग विश्वको मनहरण ।।
चत्रभुजप्रभु गिरिधरको स्वरूप सुधा, पानकीजे जीजे रहिये सदांहीशरण।।२ ।।

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
सां	नी	सां	ध	नी	प	ध	नी	ध	प	म	ग
आ	-	ज	औ	-	र	का	-	ल्ह	औ	-	र
ग	ग	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	रे	सा
दि	-	न	प्र	-	ति	औ	-	र	औ	-	र
सा	ऩी	सा	ग	ग	रे	ग	प	प	ध	ग	रे
दे	-	खि	ये	-	र	सी	-	क	गी	-	र
ग	प	प	नी	ध	नी	सां	सां	धप	गप	नीध	नी
रा	-	-	ज	-	ध	र	-	न-	मा-	-	ई

अन्तरा

X		०		२		०		३		४	
प	प	प	नी	ध	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
छी	-	न	प्र	-	ति	न	-	ई	छ	-	बि
ध	ध	ध	नी	सां	रें	सां	नी	सां	ध	नी	प
ब	-	र	नें	-	सो	कौ	-	न	क	-	वि
ग	ग	म	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	प	प
नि	-	त्य	हीं	-	शृं	गा	-	र	बा	-	गो
ग	प	प	नी	ध	नी	सां	सां	धप	गप	नीध	नी
ब	र	-	ण	-	ब	र	-	ण-	मा-	--	ई

संचारी

X		०		२		०		३		४	
ग	ग	म	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	ध	प
शो	-	भा	सिं	-	धु	अं	-	ग	अं	-	ग
X		०		२		०		३		४	
ग	ग	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	रे	सा
मो	-	-	हि	त	को	-	टि	अ	नं	-	ग
सा	ऩी	सा	ग	ग	रे	ग	प	प	ध	ग	रे
छ	-	बि	की	-	उ	ठ	त	त	रं	-	ग
ग	प	प	नी	ध	नी	सां	सां	धप	गप	नीध	नी
वि	-	श्व	को	-	-	म	न	ह-	र-	--	न

आभोग

X		०		२		०		३		४	
प	प	प	नी	ध	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
च	-	त्र	भु	-	ज	प्र	-	भु	गी	-	रि
ध	ध	ध	नी	सां	रें	सां	नी	सां	ध	नी	प
ध	र	-	को	-	स्व	रू	-	प	सु	-	धा
ग	ग	म	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	ध	प
पा	-	न	की	-	जे	जी	-	-	जे	–	-
ग	प	प	नी	ध	नी	सां	सां	धप	गप	नीध	नी
र	हि	ये	स	दा	-	ही	-	श-	र-	--	न

इसी स्वरलीपिमें निम्नलिखित पद आप गा सकते हैं।

कीर्तन नं. २२

गंगा दसमी को पद : राग बिलावल : ताल - एकताल, मात्रा - १२

आगे आगे भाज्यो जात भगीरथ को रथ, पाछें पाछें आवत रंग भरी गंग।।
झलमलात अति उज्जवल जल ज्योति अब, निरखत मानों सीस भर मोतिन मंग ।।१ ।।
जहां परेहैं भूप कबके भस्म रूप. ठौर ठौर जाग उठे होत सलिल संग।।
'नंददास' मानो अग्निके यंत्र छूटे. ऐसे सुरपुर चले धरे दिव्य अंग।।२।।

कीर्तन नं. २३

उष्णकाल श्रृंगार दर्शनको पद : राग :बिलावल ताल : धमार मात्रा : १४

यह मांगो गोपीजन वल्लभ।
मानुष जन्म और हरिसेवा, व्रज वसवो दीजे मोहिं सुलभ ।।१ ।।
श्रीवल्लभ कुलको हों हूं चेरो, वैष्णजनको दास कहाउं ।
श्री यमुना जल नित्य प्रति न्हाउं, मनक्रम वचन कृष्ण गुण गाउ ।।२ ।।
श्री भागवत श्रवण सुनों नित्य, ईन त्यज चित कहूं अनत न लाउं ।
परमानंददास यह मागत, नित्य निरखो कबहू न अघाउं ।।३ ।।

X					२		०			३			
ग	प	ध	नी	सां	सां	सां	सां	ध	नी	ध	प	धम	गरे
य	ह	मां	-	गो	-	गो	-	पी	-	जन	व	-	ल्लभ
ग	प	ध	नी	सां	सां	सां	सां	गं	गं	मं	रें	सां	धसां
मा	-	नु	ष	ज	-	न्म	औ	र	ह	रि	-	से	वा-
ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	म-	ग	रे	ग	पधनीसां
व्र	ज	व	स	वो	-	दी	-	जे-	-	मो	हि	सु	-ल्लभ

X	२	०	३
ध ध ध ध ध	नी ध	प ध म-	ग रे ग प ध नी सां
श्री - व - ल्ल	भ कु	ल को हो	हु - चे - - रो -
सां सां सां सां ध	नी ध	प म ग	प म गरे सा
वै - ष्ण व ज	नको -	दा - स	क - हा उ

अन्तरा

ग प ध नी सां	सां सां	सां सां गं	गं मं रेंसां सां
श्री - य मु ना	- ज	ल नी त्य	प्र ति ना- वुं
ध ध ध ध ध	नी ध	प ध म	ग रे गप धनीसां
म न क्र म व	च न	- कृष्ण	गु ण गा- वुं- -

स्थायी

X	२	०	३
ध ध ध ध ध	नी ध	प ध म	ग रे गप धनीसां
श्री - भा ग व	त -	- श्र व	ण सुनों - नीत्य
सां सां सां सां ध	नी ध	प म ग	प म गरे सा-
ई न त ज चि	त क	हूं अ न	त न ला- उं-

अन्तरा

ग म ध नी सां	सां सां	सां सां गं	गं मं रेंरें सांसां
प र मा - नं	- द	- दा स	य ह मां- गत
ध ध ध ध ध	नी ध	प ध म	ग रे गप धनीसां
नि त्य नि र खो	- क	ब हू -	न अ घा उ - -

किर्तन नं. २४

श्री आचार्यजीकी वधाई : राग : बिलावल - तीनताल : १६ मात्रा

आये देव विमानन चढ चढ ।
महा महोत्सव दरस करनको एक एक ते आगे बढ बढ ।।१ ।।
बिन गिरिधर ईन समकोई नाहिं, कहो कोउ बाते कछु गढ गढ ।
सगुणदास प्रभु जन्म श्रवण सुन, दे असीस मुनि मंत्रन पढपढ ।।२।।

३				X				२				०			
ग	प	ध	नी	सां	-	सां	सां	ध	नी	ध	प	ध	म	ग	रे
आ	-	ये	-	दे	-	व	वि	मा	-	न	न	च	ढ	च	ढ

अन्तरा

ग	प	ध	नी	सां	-	सां	सां	सां	गं	गं	मं	रें	रें	सां	सां
म	हा	-	म	हो	-	त्स	व	द	र	स	क	र	न	को	-
ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	म	ग	रे	ग	प	ध	नीसां
अे	-	क	अे	-	क	ते	-	आ	-	गे	-	ब	ढ	ब	ढ-

स्थायी

ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	म	ग	रे	ग	म	ध	नीसां
वि	न	गि	री	ध	र	ई	न	स	म	को	उ	ना	-	ही-	-
सां	सां	सां	सां	ध	नी	ध	प	म	ग	प	म	ग	रे	सा	सा
क	-	हो	को		उ	-	बा	-	ते	-क	छु	ग	ढ	ग	ढ

अन्तरा

ग	प	ध	नी	सां	सांसां	सां	सां	गं	गं	मं	रें	रें	सां	सां	
स	गु	ण	दा	-	प्र	भु	ज	-	-	न्म	श्र	व	ण	सु	न
ध	-	ध	-	ध	नी	ध	प	ध	म	ग	रे	ग	प	धनी	सां
दे	-	अ		-	सीस	मु	नी	मं	-	त्र	न	पढ		प-ढ	

७.५

राग मालव

''राग विभास बचायके, मालव करिये गान ।
ग वादी, संवादी ध, थाट कल्याण ही जान ।।''

राग मालव कल्याण थाटोत्पन्न राग है। राग विभास उत्तरांगप्रधान राग है जबकि राग मालव पूर्वांगप्रधान है।

राग परिचय :

इस रागमें म - नी स्वर वर्जित, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं ।

थाट - कल्याण

जाति - औड़व

वादी - ग

संवादी - ध

गायन समय - दिनका चौथा प्रहर ।

आरोह :- सा , रे, ग, प, ध, सां

अवरोह :- सां, ध, प, ग, रे, सा

पकड़ :- पधसां, सां, ध, प, ग, रे, सा।

कीर्तन नं. २५

रास को पद : राग मालव : ताल - त्रिताल, मात्रा - १६

नृत्यत लाल गोपाल रासमें, सकल ब्रजबधु संगे ।।
गिड गिड तक थुंग तत थेई तत थेई, भामिनि रति रस रंगे।।१ ।।
शरद विमल नभ उडुपति राजत, गावत तान तरंगे।।
ताल मृदंग झांझ और झालर, बाजत सरस सुधंगे।।२ ।।
शिव विरंचि मोहे सुरनर मुनि रतिपति गति मति भंगे।।
गोविन्द प्रभु रस रास रसिक मणि, भामिनि लेत उछंगे ।।३ ।।

स्थायी

X				२				०				३			
सां	सां	सां	सां	ध	ध	प	प	ग	ग	ध	प	ग	रे	सा	सा
नृ	-	त्य	त	ला	-	ल	गो	पा	-	ल	रा	-	स	में	-
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	ध	प	ध	रें	सां	सां	प	ध
स	क	ल	ब्र	ज	ब	धू	-	सं	-	-	-	गे	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
गं	गं	गं	रें	गं	रें	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
गि	ड	गि	ड	त	क	थुं	ग	त	त	थे	ई	त	त	थे	ई
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	ध	प	ध	रें	सां	सां	प	ध
भा	-	मि	नि	र	ति	र	स	रं	-	-	-	गे	-	-	-

स्थायी

X				२				०				३			
सां	सां	सां	सां	ध	ध	प	प	ग	ग	ध	प	ग	रे	सा	सा
श	र	द	वि	म	ल	न	भ	उ	डु	प	ति	रा	-	ज	त
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	ध	प	ध	रें	सां	सां	प	ध
गा	-	व	त	ता	-	न	त	रं	-	-	-	गे	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
गं	गं	गं	रें	गं	रें	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
ता	-	ल	मृ	दं	-	ग	झां	-	झ	औ	र	झा	-	ल	र
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	ध	प	ध	रें	सां	सां	प	ध
बा	-	ज	त	स	र	स	सु	धं	-	-	-	गे	-	-	-

स्थायी

X				२				०				३			
सां	सां	सां	सां	ध	ध	प	प	ग	ग	ध	प	ग	रे	सा	सा
शि	व	वि	रं	-	चि	मो	-	हे	-	सु	र	न	र	मु	नि
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	ध	प	ध	रें	सां	सां	प	ध
र	ति	प	ति	ग	ति	म	ति	भं	-	-	-	गे	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
गं	गं	गं	रें	रें	रें	सां	सां	ध	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
गो	-	वि	न्द	प्र	भु	र	स	रा	-	स	र	सि	क	म	णि
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	ध	प	ध	रें	सां	सां	प	ध
भा	-	मि	नि	ले	-	त	उ	छं	-	-	-	गे	-	-	-

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हैं।

कीर्तन नं. २६

हिंडोरा को पद : राग मालव : ताल - त्रिताल, मात्रा - १६

झूलत गोकुलचंद हिंडोरे, झूलावत सब ब्रजनारी ।।
संग शोभित वृषभान नंदिनी, पहेरे कसुंभी सारी।।१ ।।
पचरंगी डोरी गुहिलीनी, डांडी सरस संवारी।।
आसकरण प्रभु मोहन झूलत, गिरिगोवर्धनधारी ।।२ ।।

कीर्तन नं. २७

रास को पद : राग मालव : ताल - धमार, मात्रा - १४

रास विलास गहे कर पल्लव, एक एक भुज ग्रीवा मेली।।
द्वे द्वे गोपी बिच बिच माधो, निरतत संग सहेली।।१ ।।
टूट परी मोतिनकी माला, ढूंढत फिरत सकल ग्वारी
विगलित कुसुममाल कछु विलुलीत, निरखि हंसें गिरिवरधारी।।२ ।।
शरदविमलनभ चंद्र बिराजे, निरतत नंदकिशोरा ।।
परमानंदप्रभु बदन सुधानिधि, गोपी नयन चकोरा ।।३ ।।

स्थायी

X					२		०			३			
सांसां	सां	सां	ध	ध	प	प	गग	ध	प	ग	रे	सा	सा
रा-	स	वि	ला	-	स	ग	हे-	क	र	प	-	ल्ल	व
गग	ग	रे	ग	प	ध	ध	धप	ध	रें	सां	सां	प	ध
एक	ए	क	भु	ज	ग्री	-	वा-	मे	-	ली	-	-	-

अन्तरा

X					२		०			३			
गंगं	गं	रें	गं	रें	सां	सां	धध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
द्वे-	द्वे	-	गो	-	पी	-	बिच	बि	च	मा	-	धो	-
गग	ग	रे	ग	प	ध	ध	धप	ध	रें	सां	सां	प	ध
निर	त	त	सं	-	ग	स	हे-	-	-	ली	-	-	-

स्थायी

X					२		०			३			
सांसां	सां	सां	ध	ध	प	प	गग	ध	प	ग	रे	सा	सा
दू-	ट	प	री	-	मो	-	तिन	की	-	मा	-	ला	-
गग	ग	रे	ग	प	ध	ध	धप	ध	रें	सां	सां	प	ध
ढूं-	ढ	त	फि	र	त	स	कल	ग्वा	-	री	-	-	-

अन्तरा

X					२		०			३			
गंगं	गं	रें	गं	रें	सां	सां	धध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
विग	ली	त	कु	सु	म	मा	-ल	क	छु	वि	लु	लि	त
गग	ग	रे	ग	प	ध	ध	धप	ध	रें	सां	सां	प	ध
निर	खि	हँ	सें	-	गि	रि	वर	धा	-	री	-	-	-

स्थायी

X					२		०			३			
सांसां	सां	सां	ध	ध	प	प	गग	ध	प	ग	रे	सा	सा
शर	द	वि	म	ल	न	भ	चं-	द्र	बि	रा	-	जे	-
गग	ग	रे	ग	प	ध	ध	धप	ध	रें	सां	सां	प	ध
निर	त	त	नं	-	द	कि	शो-	-	-	रा	-	-	-

अन्तरा

X					२		०			३			
गंगं	गं	रें	गं	रें	सां	सां	धध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
पर	मा	-	नं	द	प्र	भु	वद	न	सु	धा	-	नि	धि
गग	ग	रे	ग	प	ध	ध	धप	ध	रें	सां	सां	प	ध
गो-	पी	-	न	य	न	च	को-	-	-	रा	-	-	-

इसी स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते है।

कीर्तन नं. २८

इन्द्रमानभंगको पद : राग मालव : ताल- धमार, मात्रा : १४

जय जय लाल गोवर्धनधारी, इन्द्रमान भंग कीनो ।।
वाम भुजा राख्यो गिरि नायक, भक्तनको सुख दीनो ।।१।।
सात द्योस मघवा पचहार्यो, गो सुत शृंग न भीनो ।।
कृष्णदास गिरीधर पिय आगें, पाय पर्यो बलहीनो ।।२।।

कीर्तन नं. २९

जन्माष्टमीकी वधाई : राग : मालव - ताल : आडा चौ ताल : मात्रा - १४

पद्म धर्यो जन ताप निवारन ।
चक्र सुदर्शन धर्यो कमल कर, भक्तनकी रक्षा के कारण ।।१।।
शंख धर्यो रिपु उदर विदारन, गदा धरी दुष्टन संघारन ।
चारौं भुजा चारौं आयुध धरे, नारायण भुवभार उतारन ।।२।।
दीनानाथ दयाल जगतगुरू, आरति हरन भक्त चिंतामनि।
परमानंद दासको ठाकुर, यह औसर औसर छाडो जिन ।।३।।

X	२		३		४		X	२		३		४	
सां	-	-	ध	ध	प	प	ग	ध	प	ग	रे	गरे	सा
प	द्म	ध	र्यो	-	ज	न	ता	प	नी	वा	-	र	न
ग	ग	ग	प	प	ध	ध	ध	गं	रें	गं	सां	प	ध
प	द्म	ध	र्यौ	-	ज	न	ता	-	प	नी	वा	र	न

अन्तरा

रें	रें	रें	रें	रें	रें	रें	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां
च	क्र	सु	र्द	-	श	न	ध	र्यो	क	म	ल	क	र
ग	ग	ग	प	ध	ध	ध	गं	रें	गं	सां	-	प	ध
भ	क्त	न	की	-	र	क्षा	-	के	-	का	-	र	ण ।।१।।

स्थायी

X	२		३		४		X	२		३		४	
सां	सां	सां	सां	-	ध	प	ग	ग	ध	प	ग	रे	सा
शं	ख	ध	यौ	-	री	पु	उ	द	र	वि	दा	र	ण
ग	ग	ग	प	ध	ध	ध	गं	रें	गं	सां	-	प	ध
ग	दा	ध	री	दु	-	ष्ट	न	सं	-	हा	-	र	न ।।२।।

अन्तरा

X	२		३		४		X	२		३		४	
रें	रें	रें	रें	रें	रें	ध	सां	रें	गं	रें	रें	सां	सां
चा	रो	भु	जा	चा	-	रो	आ	-	यु	ध	ध	रे	-
ग	ग	ग	प	प	ध	ध	ध	गं	रें	सां	-	प	ध
ना	रा	-	य	न	भु	व	भा	र	उ	ता	-	र	न

स्थायी

X	२		३		४		X	२		३		४	
सां	सां	-	ध	प	प	ग	ध	प	ग	रे	रे	सा	सा
दी	ना	-	ना	थ	द	या	ल	ज	ग	त	-	गु	रू
ग	ग	ग	प	प	ध	ध	ध	गं	रें	गं	सां	प	ध
आ	र	ती	ह	र	न	-	भक्त	चीं	-	ता	म	नी	

अन्तरा

X	२		३		४		X	२		३		४	
रें	रें	रें	-	रें	-	रें	घ	सां	रें	गं	रें	सां	सां
प	र	मा	-	नं	-	द	दासको		ठा	-	कु	र	
ग	ग	ग	प	प	ध	-	ध	गं	रें	गं	सां	प	ध
यह	अवस		र	औ	-	स	र	छां	-	डो	जी	न	।।३।।

कीर्तन नं. ३०

रासको पद : राग मालव - आदि ताल ८ मात्रा

चंद गोविंद गोपी तारागण, बने रासमें बनवारी ।
मुख प्रताप रंजित वृंदावन, नवल युवति जन सुख कारी ।।१।।
कमलनयन कमनीय मनोहर, मनहरनी गोकुलनारी ।
हस्त कमल पर गलित कुसुमदल, नृत्य मान प्रीतम प्यारी ।।२।।
रसमय रास रसिकनी भामिनी, अति रसाल बने बिहारी।
कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि, रसिकराय गिरिवर धारी ।।३।।

X	२	०	३	X	२	०	३
सां-	सां सां	ध -	प प	ग -	ध प	ग रे	सा सा
चं -	द ग	वीं -	द गो	पी -	ता -	रा -	ग न
ग ग	ग -	ग प	प ध	- सां	सां सां	- ध	प ध
ब न्यो	है -	रा -	स में	- ब	न वा	- री	- -

अन्तरा

X	२	०	३	X	२	०	३
रें रें	रें रें	- रें	रें -	ध ध	सां रें	गं रें	सां सां
मु ख	प्र ता	- प	रं -	जि त	वृं -	दा -	व न
प प	ग ग	प प	ध ध	सां सां	सां -	ध -	प ध
न व	ल यु	व ती	ज न	सु ख	फा -	री -	- -

स्थायी

X	२	०	३	X	२	०	३
सांसां	सां सां	ध ध	प प	ग -	ध प	ग रे	सा सा
क म	ल न	य न	क म	नी -	य म	नो -	ह र
ग ग	ग ग	प -	ध -	सां सां	सां -	ध प	ध -
म न	ह र	नी -	गो -	कु ल	ना -	री -	- -

अन्तरा

X	२	०	३	X	२	०	३
रें रें	रें रें	रें रें	रें रें	ध सां	सां रें	गं रें	सां सां
ह -	स्त क	म ल	प र	गलि	तकु	सुम	दल
प प	ग ग	प प	ध -	सां सां	सां -	ध प	ध -
नृ -	त्य मा	- न	प्री -	त म	प्या -	री -	- -

स्थायी

X	२	०	३	X	२	०	३
सांसां	सां सां	ध -	प प	ग ग	ध प	ग रे	रे सा
र स	म य	रा -	स र	सि क	नी -	भा -	मी नी
ग ग	ग ग	- प	प ध	ध सां	- सां	- ध	प ध
अति	र सा	- -	ल ब	ने बि	- हा	- री	- -

अन्तरा

X	२	०	३	X	२	०	३
रें रें	रें रें	रें रें	रें रें	धसां	सां रें	गं रें	सां सां
कृ-	ष्ण दा	- स	प्र भु	रसि	कशि	रो -	म नी
प प	ग ग	प प	ध ध	सां सां	सां -	ध -	प ध
र सि	क रा	- य	गि री	व र	धा -	री -	- -

७.६ राग आसावरी

''ग, ध, नी, कोमल सुर लगें, चढत ग- नी न सुहात
ध - ग वादी संवादी ते, आसावरी कहात।''

इस राग की वैचित्र्यता ग, प, ध, स्वरोंपर निर्भर है। यह राग विशेषत: अवरोह में खिलता है।

उत्तर भारतमें कोमल ऋषभ आसावरी भी प्रचलित है।

राग परिचय

ग, ध, नी स्वर कोमल, आरोहमें ग - नि वर्जित, शेष सभी स्वर शुद्ध ।

थाट - आसावरी

जाति - औड़व - सम्पूर्ण

वादी - ध

संवादी - ग

गायन समय - प्रात:काल। पुष्टिमार्गमें शृंगार से राजभोग तक यह राग गाया जाता है।

आरोह :- सा, रे, म, प, ध, सां

अवरोह :- सां, नी, ध, प, म, ग, रे, सा

पकड़ :- रे, म, प, नी, ध, प ।

कीर्तन नं. ३१

पनघट को पद : राग आसावरी : ताल - त्रिताल मात्रा - १६

ग्वालिन कृष्ण दरससों अटकी।।
बार बार पनघट पर आवत, सिर यमुनाजल मटकी।।१ ।।
मदन मोहनको रूप सुधानिधि, पीवत प्रेमरस गटकी।।
कृष्णदास धन्य धन्य राधिका, लोकलाज सब पटकी ।।२ ।।

मुखडा

३				X				२				०			
रे	म	प	सां	ध॒	ध॒	प	प	ध॒	म	पध॒	मप	ग॒	ग॒	रे	सा
ग्वा	-	लि	न	कृ	-	ष्ण	द	र	स	सों-	--	अ	ट	की	-

अन्तरा

X				२				०				३			
म	प	ध॒	नी॒	सां	सां	सां	सां	नी॒	नी॒	रें	सां	ध॒	ध॒	प	प
बा	-	र	बा	-	र	प	न	घ	ट	प	र	आ	-	व	त
प	प	गं॒	गं॒	रें	रें	सां	सां	रें	नी॒	ध॒	प	रे	म	प	सां
सि	र	य	मु	ना	-	ज	ल	म	ट	की	-	ग्वा	-	लि	न

स्थायी

X				२				०				३			
रे	म	प	नी॒	ध॒	ध॒	प	प	ध॒	म	पध॒	मप	ग॒	ग॒	रे	सा
म	द	न	मो	ह	न	को	-	रू	-	प-	सु-	धा	-	नि	धि
सा	रे	म	म	प	प	म	प	नी॒	ध॒	प	प	-	-	-	-
पी	-	व	त	प्रे	म	र	स	ग	ट	की	-	-	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
म	प	ध॒	नी॒	सां	सां	सां	सां	नी॒	नी॒	रें	सां	ध॒	ध॒	प	प
कृ	-	ष्ण	दा	-	स	ध	न्य	ध	-	न्य	रा	-	धि	का	-
प	प	गं॒	गं॒	रें	रें	सां	सां	रें	नी॒	ध॒	प	रे	म	प	सां
लो	-	क	ला	-	ज	स	ब	प	ट	की	-	ग्वा	-	लि	न

इस स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हो ।

कीर्तन नं. ३२

जन्माष्टमीकी बधाई : राग आसावरी : ताल - त्रिताल, मात्रा १६

तुमरे भागि सुनो मेरी गोपी, भयो ऐसों लाल हमारैं।।
अब चिरजीवौ भागि सबनके, खेलो मेरे तुम्हारैं ।।१।।
हों सुख देखों तुम सुख देखो, प्यावो दूध मल्हावो।।
मेरे लालकी तुम सब भाभी, उबटि न्हवाय बैठावो ।।२।।
तुम लेहु गोद लगावो छाती, मुख चूमो और खिलावो।।
श्री विठ्ठलगिरीधरनलाल को, गंगा करन सिखावो ।।३।।

कीर्तन नं. ३३

श्री महाप्रभुजीकी बधाई : राग आसावरी : ताल -धमार, मात्रा - १४

प्रीत बंधी श्री वल्लभ पदसों, और न मनमें आवे हो।।
पढ पुरानषट दर्शन नीके, जो कछुं कोउ बतावे हो।।
जबते अंगीकार कियो है, तबते न अन्य सुहावे हो ।।
पाय महारस कोन मूढमति, जिततित चित भटकावे हो।।२।।
जाके भाग्य फले या कलिमें, शरण सोई जन आवे हो।।
नंदनंदन को निजसेवक व्है, दृढकर बांह गहावे हो।।३।।
जिन कोउ करो भूलमन शंका, निश्चय करि श्रुति गावे हो।।
रसिक सदा फल रूप जानके, ले उच्छंग हुलरावे हो।।४।।

मुखडा

X					२		०			३			
सांसां	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	रें	सां	ध	ध	प	प
प्री-	त	बं	धी	-	श्री	-	व-	ल्ल	भ	प	द	सौं	-
पप	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रेंनी	रें	सां	ध	म	प	ध
ओ-	र	न	म	न	में	-	आ-	वे	-	हो	-	-	-

अंतरा

X					२		०			३			
मप	ध	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	रें	सां	ध	ध	प	प
पढ	पु	रा	-	न	ष	ट	दर	श	न	नी	-	के	-
पप	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रेंनी	रें	सां	ध	म	प	ध
ज़ो-	क	छुं	को	-	उ	ब	ता-	वे	-	हो	-	-	-

स्थायी

X					२		०			३			
सांसां	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	रें	सां	ध	ध	प	प
जब	ते	-	अं	-	गी	-	का-	र	कि	यो	-	है	-
धध	म	म	रे	म	पध	मप	गग	रे	सा	रे	म	प	प
तब	ते	न	अ	-	न्य-	सु-	हा-	वे	-	हो	-	-	-

अंतरा

X					२		०			३			
मप	ध	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	रें	सां	ध	ध	प	प
पा-	य	म	हा	-	र	स	को-	न	मू	-	ढ	म	ति
पप	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रेंनी	रें	सां	ध	म	प	ध
जित	ति	त	चि	त	भ	ट	का-	वे	-	हो	-	-	-

स्थायी

X					२		०			३			
सांसां	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	रें	सां	ध	ध	प	प
जा-	के	-	भा	-	ग्य	फ	ले-	या	-	क	लि	में	-
धध	म	म	रे	म	पध	मप	गग	रे	सा	रे	म	प	प
शर	ण	सो	ई	-	ज-	न-	आ-	वे	-	हो	-	-	-

अंतरा

X					२		०			३			
मप	ध	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	रें	सां	ध	ध	प	प
नं-	द	नं	द	न	को	-	निज	से	-	व	क	व्हे	-
पप	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रेंनी	रें	सां	ध	म	प	ध
दृढ	क	र	बां	-	ह	ग	हा-	वे	-	हो	-	-	-

स्थायी

X					२		०			३			
सांसां	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	रें	सां	ध	ध	प	प
जिन	को	उ	क	रो	-	भू	-ल	म	न	शं	-	का	-
धध	म	म	रे	म	पध	मप	गग	रे	सा	रे	म	प	प
नि-	श्च	य	क	रि	श्रु-	ति-	गा-	वे	-	हो	-	-	-

अंतरा

X					२		०			३			
मप	ध	नी	सां	सां	सां	सां	नीनी	रें	सां	ध	ध	प	प
रसि	क	स	दा	-	फ	ल	रू-	प	जा	-	न	के	-
पप	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रेंनी	रें	सां	ध	म	प	ध
ले-	उ	च्छं	-	ग	हु	ल	रा-	वे	-	हो	-	-	-

इस स्वरलीपिमें आप निम्नलिखित पद गा सकते हो ।

कीर्तन नं. ३४

पलना को पद : राग आसावरी : ताल - धमार, मात्रा - १४

प्रियनवनीत पालनें झूलें श्री विठ्ठलनाथ झुलावैं हो।।
कबहुँक आप संग मिल झुलैं, कबहुँक उतरि झुलावैं हो।।१।।
कबहुंक सुरंग खिलौना लै लै नाना भाँति खिलावैं।।
चकरी बंकी फिरकनी लहेंट्स, झुन झुन हाथ बजावैं।।२।।
भोजन करत थार एक झारी, दोऊ मिलि खाय खवावैं।।
गुप्त महारस प्रकट बनावें, प्रीति नई उपजावें।।३।।
धनि धनि भाग्य दास निजजनके, जो यह दर्शन पावैं।।
छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल, निगम एक करि गावैं।।४।।

कीर्तन नं. ३५

विवाह को पद : राग आशावरी : तीन ताल - मात्रा - १६

मैया मोहि ऐसी दुलहनी लावे ।
जैसी ये काहुकी डिठोनीयां, रूनक झुनक घर आवे ।।१।।
करकर पाक रसाल रसोई, अपने कर ले मोहि जीमावे।
कर अंचल पट ओट बाबाको, ठाडी ब्यार ढुरावे ।।२।।
मोहि उठाय गोद बैठारे, कर मनुहार मनावे ।
अहो मेरे लाल कहो बाबासो, तेरो व्याह करावे ।।३।।
नंदराय नंदरानी हिलमिल, सुख समुद्र बढावे ।
परमानंद प्रभुकी बाते सुन, आनंद उर न समावे ।।४।।

३				X				२				०			
रे	म	प	सां	ध	-	प	-	ध	म	पध	मप	ग	-	रेसा	
मै	या	मो	हे	ऐ	-	सी	-	दुल	ह-	न-		भा	-	वे-	
रे	म	प	सां	म	-	प	-	ध	-	ध	-	सां	-	सां	-
मे	रो	मा	ई	जै	-	सी	-	ये	-	का	-	हु	-	की	-
सां	रे	नी	सां	प	प	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रें	नी	ध	प
डी	ठो	नी	या	रू	न	क	झु	न	क	घ	र	आ	-	वे	-

स्थायी

३				X				२				०			
रे	म	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां	सां	नी	-	सां	सां
मै	या	मो	हे	क	र	क	र	पा	-	क	र	सा	-	ल	र
रें	नी	ध	प	नी	नी	नी	-	ध	प	पध	मप	ग	-	ग	ग
सो	-	ई	-	अ	प	ने	-	कर	ले-	-	-	मो	-	ही	जी
रे	-	सा	-	म	म	प	-	ध	ध	ध	ध	सां	-	सां	सां
मा	-	पे	-	क	र	अं	-	च	ल	प	ट	ओ	-	ट	बा
रें	नी	सां	-	प	-	गं	-	रें	-	सां	सां	रें	नी	ध	प
बा	-	सो	-	ठा	-	डी	-	ब्या	-	र	ढु	रा	-	वे	-
रे	म	प	सां	सां	-	सां	सां	सां	-	सां	सां	नी	-	सां	सां
मै	या	मो	हे	मो	-	ही	उ	ठा	-	य	गो	-	-	द	बै
रें	नी	ध	प	नी	नी	नी	नी	ध	म	पध	मप	ग	-	-	-
ठा	-	रे	-	क	र	म	नु	हा	-	र	म	ना	-	-	-
रे	सा	-	-	म	म	प	प	ध	-	ध	ध	सां	-	सां	-
वे	-	-	-	अ	हो	मे	रे	ला	-	ल	क	हो	-	बा	-

रें	नी	सां	-	प	-	गं	-	रें	-	सां	सां	रें	नी	ध	प
बा	-	सो	-	ब्या	-	ह	क	रा	-	वे	-	मै	या	मो	हे
सां	-	सां	सां	-	सां	सां	सां	नी	-	सां	-	रें	नी	ध	प
नं	-	द	रा	-	य	नं	द	रा	-	नी	-	हि	ल	मि	ल
नी	नी	नी	नी	ध	म	पध	मप	ग	-	-	-	रे	सा	-	-
सु	ख	न	स	मु-	द्बु-	ब	-	ठा	-	-	-	वे	-	-	-
म	म	प	प	ध	ध	ध	सां	सां	-	रें	-	नी	-	सां	सां
प	र	मा	-	नं	द	प्र	भु	की	-	बा	-	ते	-	सु	न
प	-	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रें	नी	ध	प	रे	म	प	सां
आ	-	नं	द	उ	र	न	स	मा	-	वे	-	मै	या	मो	हे

किर्तन नं. ३६

हिलगको पद : राग : आसावरी - तीन ताल मात्रा - १६

मेरो माई हरिनागरसों नेह ।
जब ते द्रष्टि परे मनमोहन, तबते विसर्यो गेह ।।१।।
कोई निंदो कोउ वंदो, मो मन गयो संदेह ।
सरिता सिधु मिली परमानंद, भयो एक रस तेह ।।२।।

३				X				२				०			
रे	म	प	सां	ध	ध	प	-	ध	म	पध	मप	ग	ग	रे	सा
मे	रो	मा	ई	ह	री	ना	-	ग	र	सो-	- -	ने	-	ह	-
रे	म	प	सां	म	म	प	प	ध	ध	ध	ध	घ	सां	सां	सां
मे	रो	मा	ई	ज	ब	ते	-	दृ	-	ष्टि	-	प	रे	म	न
३				X				२				०			
रे	नी	सां	सां	प	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रेंसां	नी	ध	प
मो	-	ह	न	त	ब	ते	-	वि	स	यौं	-	गे	-	-	ह
रे	म	प	सां	सां	-	सां	-	सां	-	सां	-	नी	-	सां	-
मे	रो	मा	ई	को	-	उ	-	निं	-	दो	-	को	-	उ	-
रेंसां	नी	ध	प	नी	नी	नी	नी	ध	म	प	ध	म	प	ग	-
वं	-	दो	-	मो	-	म	न	ग	-	यो	-	सं	-	दे	-
ग	रे	सा	-	म	म	प	प	ध	-	ध	-	सां	सां	सां	सां
-	ह	-	-	स	रि	ता	-	सिं	-	धु	मि	ली	प	र	मा
रें	नी	सां	सां	प	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रेंसां	नी	ध	प
नं	-	द	-	भ	यो	-	-	ए	क	र	स	ते-	-	ह	-

श्रीमद् वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजी

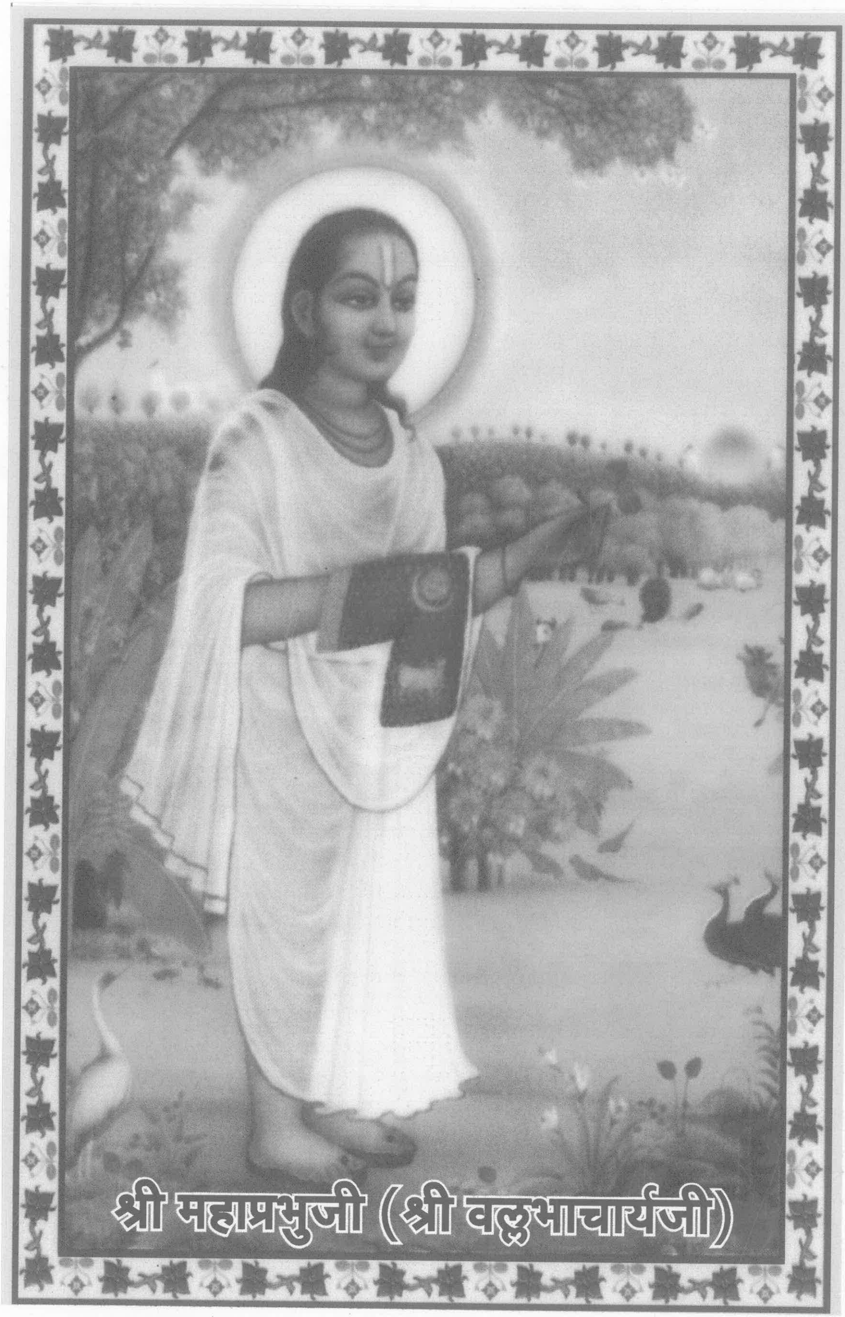
श्री महाप्रभुजी (श्री वल्लभाचार्यजी)

श्रीमद् वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजी

भक्ति मार्गाब्जमार्तण्ड: जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी भारतके भक्तिमार्गके एक महान आचार्य थे, जिन्होने श्रीमद् भागवतका दोहन कर निर्गुण पुष्टिभक्ति रूप परमस्नेहात्मिका सेवाका मार्ग प्रकट करके भगवान श्रीकृष्णकी सारस्वत कल्पकी व्रजलीलाका अनुभव अपने सेवकोंको कराया था।

आपके पूर्वज श्री यज्ञनारायण भट्टने जब प्रथम सोमयज्ञ किया तब यज्ञकी वेदीमें से साक्षात् भगवानने प्रकट होकर वरदान दिया था कि सो सोमयज्ञ पुरे होने पर स्वयं (भगवान) उनके कुलमें प्रगट होंगे। जब कुलपरंपरानुगत श्री लक्ष्मण भट्टजीने ५ सोमयज्ञ करके सो सोमयज्ञ पुरे किये तब वि. सं. १५३५ वैशाख (गुर्जर चैत्र) कृष्ण एकादशी के शुभ दिन माता इल्लमागारुजीकी कुख से मध्यप्रदेश (आजके छत्तीसगढ़) स्थित रायपुर जिल्लेके चम्पारण्य नामके वनमें अग्नि कुंड में से हुआ था। साक्षात् भगवद् अवतार रुप श्री महाप्रभुजी तैलंग ब्राह्मण परिवारमें तैतरीय शाखाके भारद्वाज गोत्रमें प्रगटे थे। अग्निकुंडमेंसे आपका प्राकट्य होने से एवं भगवन्मुखार्विंद (आस्य) स्वरूप होनेसे आप 'वैश्वानर' नाम से जाने जाते हैं।

पांचवर्षकी वयमें श्री वल्लभका उपनयन संस्कार होने के पश्चात् विष्णुचित् नामके गुरुसे अध्ययन कराया गया। बाल्यावस्थामें ही आपश्रीने संपूर्ण वेद, वेदांत षड्शास्त्र गीता, पुराण, पंचरात्र आदि सभी ग्रन्थोमें पारंगतता प्राप्त करली। अल्प आयुमें ही अगाध विद्वत्ताके कारन 'बाल सरस्वती' नाम से भी जाने जाते थे।

आपके भूतल प्रागट्यके प्रमुख तीन उद्देश्य थे।

(१) प्रभुकी नित्यलीला धाम गोलोक धामसे बिछडे हुए दैवी जीवों को शरणमें लेकर फिरसे नित्य लीला धामकी प्राप्ती करानी ।

(२) श्रीमद् भागवतका गूढार्थ प्रगट करना ।

(३) मायावादको निरास कर शुद्ध साकार ब्रह्मवादका स्थापन करना ।

आपने तीन बार भारत भ्रमण किया और कई दैवी जीवोंको शरणमें लेकर उद्धार किया। श्री हरिराय महाप्रभुजी कीर्तनकी निम्नलिखित पंक्तिमें लिखते हैं।

''प्रकटे पुष्टिमहारस देन।। नित्य संबंध कराय भावदे, विरह अलौकिक बेन ।। यह प्राकट्य रहत हृदयमें तीन लोक भेदनकों जेन।।२।। रहिये ध्यान सदा इनके पद

શ્રી વલ્લભ પુસ્તકાલય
કાંદીવલી મુંબઈ
સુખધામ : ૨૮૦૧૨૮૩૦
સુરેન્દ્ર જ શાહ : ૯૮૩૩૨૭૨૩૮૩
ક્રિષ્ણાબેન શાહ : ૭૫૦૬૦૮૭૪૬૨
No.: K 060

पातक कोऊ [illegible] निगमगति साधन और नहेन ।।३।।'' और ''रतिपथ प्रक [illegible] श्री वल्लभ भूतल।। हुलसे सकल दैवीजनके मन साधन बि [illegible]

आप [illegible] ण के आन्ध्रमें विद्यानगर राज्यमें २८ दिन मायावादियोंके साथ शास्त्राथ कर सर्वको निरुत्तर करदिये और शुद्धाद्वैत ऐसे ब्रह्मवादका स्थापन किया। विद्यानगरके राजा कृष्णदेवने आपश्रीका कनकाभिषेक कर ''अखंड भूमंडलाचार्य जगद्गुरु श्रीमहाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्य'' की पदवी से संमानित किया। कनकाभिषेकमें प्राप्त सुवर्ण का अस्वीकार, उसे ब्राह्मणोंमें बांट देना, आपके अद्भूत त्याग का सचोट उदाहरण है। मध्य प्रदेश स्थित ओरछामें आपश्री द्वारा किया शास्त्रार्थ आपश्रीकी अद्वितीय विद्वत्ताका प्रत्यक्ष प्रमाण है। यहाँ पर भी घटसरस्वती नामक तांत्रिकको परास्त किया - और ब्रह्मवादका विजयध्वज लहेराया। ओडछाके राजाने भी आपका कनकाभिषेक किया था।

जगन्नाथ पुरीमें राजाके यहाँ धर्म सभामें आपश्रीने मायावादी पंडीतोंको परास्त देकर राजाके चार प्रश्नोंके उत्तर रुपमें स्वयं श्री जगन्नाथजीके पाससे उत्तर रुप श्लोकको प्राप्त किया -

''एकं शास्त्रं देवकी पुत्रगीतम्।

एको देवो देवकीपुत्र एव।।''

मंत्रोप्येकस्तस्य नामानि यानि।

कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।''

अर्थात् : भगवान श्री कृष्ण के द्वारा कही गयी गीता ही सब शास्त्रोंका साररूप ग्रंथ है। देवकीपुत्र श्री कृष्णही एकमात्र देवाधिदेव हैं। श्री कृष्ण के नामही सर्वश्रेष्ठ मंत्र हैं। और श्री कृष्ण की सेवा ही सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य हैं। गोकुलमें ठकुरानी घाटपर श्रावण शुक्ल एकादशीकी मध्यरात्रि साक्षात् श्री ठाकोरजी स्वयं पधारे और ब्रह्मसंबंध द्वारा दैवीजीवोंका उध्दार करनेकी आज्ञा की । आपने सूतरका केसरी पवित्रा और मिसरी भोग धराया। पश्चात् आपने ''मधुराष्टकम्'' से स्तुतिकी । श्रावण शुक्ल द्वादशी के (पवित्रा बारस) दिन दामोदरदास हरसानीजीको ब्रह्मसंबंधकी सर्व प्रथम दीक्षा दी। और इस तरह यह दिन पुष्टिमार्गका प्रागट्यदिन माना जाता है।

भारत यात्रा समय दक्षिणमें पंढरपुरमें श्री विठ्ठलनाथजीने आपश्रीको विवाह करनेकी आज्ञाकी। आपने काशी पधारकर श्री देवन वर्मा की सुपुत्री श्री महालक्ष्मीजीसे विवाह किया और आपके गृह दो भगवद् स्वरुपका प्रागट्य हुआ (१) श्री गोपीनाथजी (प्रा. सं. १५६७ भादरवा वद १२) और (२) श्री विठ्ठलनाथजी श्री गुसांईजी (प्रा. सं. १५७२ मागसर (पौष) वदी ९)

पुष्टिसम्प्रदायके प्रवर्तक गुरुरूप श्री वल्लभाचार्यजी एक आदर्श गुरु थे। श्री कृष्णलीलारूप सेवा-कथामें सदा परायणता - श्री भागवत - तत्वज्ञता - पांडित्य, वेदादिशास्त्रपारंगतता, शास्त्रानुकूल आचरण, श्रीकृष्णसेवामें प्रतिबंधक वादोंका निराकरण करके प्रमाण चतु:ष्टयीकी एक वाक्यता करके स्वसिद्धान्तके आप उपदेशक थे। आपने स्वयं श्रीकृष्ण परायण होते हुए भगवत्सेवोचित निरुपधि स्नेहका उद्बोधन किया। आप एक आदर्श गुरु थे और एक सच्चे जौहरी की तरह परखकर शिष्य बनाते दीक्षा देते । श्री सूरदासजी छोटेसे पदमें गुरु-महिमा बताते हैं कि- ''गुरु बिना ऐसी कौन करे ?'' माला तिलक मनोहर बानों लै सिर छत्र धरे ।। भवसागरमें बूडत राखे, दीपक हाथ धरे । 'सूरश्याम' गुरु ऐसो समरथ छिनमें ले उद्धरे ।''

एक बार श्री महाप्रभुजी के दर्शन करने श्री परमानंददासजी अडेल आये। तब उन्हें यमुना किनारे संध्या-वंदन करते हुए श्री महाप्रभुजीमें अति अद्भुत अलौकिक साक्षात् श्रीकृष्ण के दर्शन हुए। इस प्रसंगसे सिद्ध होता है कि भगवदीयोंको श्रीमहाप्रभुजीका पूर्ण पुरुषोत्तमरूपमें अनुभव हुआ है। श्री गुसांईजीने भी श्री वल्लभाष्टक ग्रंथमें उनको 'वस्तुत: कृष्ण एव' से संबोधित किया है।

श्री महाप्रभुजीने पुष्टिजीवोंको पुष्टिप्रभुके सेवास्मरणका मार्ग दिखाकर भविष्यमें भी पुष्टिजीव, किसी भी तरहकी दिक्कत के बिना पुष्टिभक्तिमार्गका अनुसरण कर सकें इसलिये अनेक ग्रंथोंकी रचना की। आपश्री के द्वारा लिखित ग्रंथ मुख्यतया इस प्रकार हैं:- ब्रह्मसूत्रभाष्य, मीमांसासूत्रभाष्य, तथा गायत्रीमंत्र भाष्य, श्री भागवतकी सूक्ष्म टीका और भागवत पर सुबोधिनीजी व्याख्या । स्वतंत्र ग्रंथोंमें तत्वार्थदीपनिबंध, षोडशग्रंथ, पत्रावलंबन, और श्री मधुराष्टक, श्री नंदकुमाराष्टक, श्री पुरुषोत्तमसहस्त्रनाम, श्री त्रिविधनामावली आदि स्तोत्र हैं। अन्य ग्रंथोंमें सेवाफल विवरण, परिवृढाष्टक, शिक्षाश्लोक, न्यासादेश, अणुभाष्य, पूर्व मीमांसा भाष्य, श्रीमद् भागवतके दशम स्कंधकी अनुक्रमणिका, प्रेमामृत, इत्यादि। जैसे अवतारकालमें प्रभुने वेणुनाद द्वारा

K-10

भक्तोंका उद्बोधन किया था। उसी तरह श्री महाप्रभुजीने अपने इन ग्रंथों द्वारा सिद्धान्तोंका प्रतिपादन करके पुष्टिभक्तोंका उद्बोधन किया। इसी बातका समर्थन करता यह सुन्दर पद हमें प्राप्त है। ''ऐसी बंसी बाजी बनघनमें व्यापि रही ध्वनि महामुनीनकी समाधि लागी... तब वेणुनाद द्वार अब श्री लक्ष्मणभट्ट भूपकुमार, पद्मनाभ दैवोद्धार अर्थ त्यागी।।'' और ''वेणुगीत पुन युगलगीतकी रसबरखा बरसाई।। प्रकट व्है मारग रीत दिखाई।।''

श्री ठाकोरजीने आपको अपने पास पधारने के लिये तीन बार आज्ञा की थी।

भगवद् आज्ञासे आपश्रीने गृहस्थाश्रमको त्यागकर त्रिदंड सन्यास ग्रहण किया। निर्जल-निराहार बिराजकर अपने पुत्रोंको एवं समस्त वल्लभी सृष्टि को शिक्षाश्लोकोंका उपदेश करके आपने वि. सं. १५८७ आषाढ शुक्ल २ के दिन काशीके हनुमान घाट पर गंगाजीकी मध्यधारामें प्रवेश कीया और अलौकिक तेज पुंज स्वरुपसे सदेह नित्य लीलामें पधारे। इस तरह आपश्रीने आसुर व्यामोह लीला दिखाई। लेकिन आज भी निज सेवकोंके गृह आप सदैव बिराजते हैं।

ऐसे श्री महाप्रभुजी के लिए इतना ही कहा जा सकता है :-

''श्रीमद् वल्लभनामध्येयसदृशो भावि न भूतोऽस्त्यपि।''

अर्थात् :- श्री महाप्रभुजी जैसे न कोई हुए है, न कोई है, और न कभी होंगे। श्री हरिराय महाप्रभुजी रचित निम्नलिखित पद इसी बातका समर्थन करता है। ''जिन श्री वल्लभ रूप न जान्यो। जननी उदर आय कहा कीनो, जनम अकारथ मान्यो।।

कहा भयो जु सकल शास्त्र पढयो, नाहक फाट्यो पान्यो।

अग्निरूप प्रभु सकल सिरोमनी, देत अभय पद दान्यो।

रसिक प्रीतम चरण भजत तें, सकल पदारथ जान्यो।।''

भक्तकवि सगुणदासने भी अपने इस पद द्वारा हमें बोध कराया कि यदि श्री वल्लभाचार्यजीका प्राकट्य न होता तो वसुधा सूनी रह जाती।

''नातर लीला होती जूनी। जोपें श्रीवल्लभ प्रगट न होते वसुधा रहती सूनी ।।''

श्री वल्लभाचार्यजीका उद्भवकाल साहित्यिक, धार्मिक एवं संगीतात्मक भक्तिके क्षेत्रमें विशेष महत्व रखता है।

।। श्री हरिः ।।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

द्वारा

पूज्यपाद गो. श्री निकुंजलता बेटीजी

की आज्ञा एवं मार्गदर्शनसे अंग्रेजीमें पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । जिसमें

Jagadguru Shri Vallabhacharyaji
(With colour pictures)

Mahaprabhu Shri Vallabh
(Complete Pictorial story for children)

Prabhucharan Shri Gusainji
(With colour pictures)

Shri Shrinathji
(With colour pictures)

ABC of Pushtimarg
(With pictures)

Thus You Pray
(Nityaniyam strotras, Kirtan, Dhol etc
for children & youngsters)

प्राप्ति स्थान

पू.पा.गो.श्री निकुंजलताबेटीजी
अे/४, राजनीलम, ग्राउन्ड फ्लोर,
डॉ. रजबअली पटेल लेन,
ब्रीजकेन्डी अस्पताल के सामने,
भुलाभाई देसाई रोड, मुंबई - ४०००२६.
फोन : २३५३८८१४ / ९८२००२३७८२
ईमेल : nikunjalabetiji@hotmail.com

कार्यालय :
श्री सुरेन्द्रभाई महेता
६०४/मेकर चेम्बर-५, नरीमन पोईन्ट,
मुंबई - ४०० ०२०.
फोन : २२८३ ५२९५
२२८७ ५५३४

।। श्री हरिः ।।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

द्वारा प्रकाशित
पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम की पुस्तिका

कीर्तन प्रवेशिका : पाठ्यक्रम नं १
कीर्तन प्रबोध : पाठ्यक्रम नं २
कीर्तन सुबोध : पाठ्यक्रम नं ३
कीर्तन प्रवीण : पाठ्यक्रम नं ४
कीर्तन विशारद : पाठ्यक्रम नं ५

प्राप्ति स्थान

पू.पा.गो.श्री निकुंजलताबेटीजी
अे/४, राजनीलम, ग्राउन्ड फ्लोर,
डॉ. रजबअली पटेल लेन,
ब्रीजकेन्डी अस्पताल के सामने,
भुलाभाई देसाई रोड, मुंबई - ४०००२६.
फोन : २३५३८८१४ / ९८२००२३७८२
ईमेल : nikunjalabetiji@hotmail.com

श्री सुरेन्द्रभाई महेता
६०४/मेकर चेम्बर-५, नरीमन पोईन्ट,
मुंबई - ४०० ०२०.
फोन : २२८३ ५२९५
२२८७ ५५३४

श्रीमती उर्मिलाबेन बी. वोरा
४०१, सी, पूर्णिमा बील्डींग,
२३, पेडर रोड, मुंबई - ४०००२६.
फोन नं.: २३५१०२७२
मो.: ९८१९६३८७७६

श्री सुरेन्द्रभाई शाह
सुखधाम, ठठाई भाटियावाडी,
एस. वी. रोड, कांदिवली (वेस्ट),
मुंबई - ४००१०१.
फोन : २८६३२३९६
मो.: ९८३३२७२३८३

श्रीमती नलीनीबेन महेता
६०१, एस. एस. सदन,
गुलमहोर क्रोस रोड नं.६,
जे.बी.पी.डी. स्कीम,
मुंबई - ४०००४७.
फोन नं.: ६५०१४८२४
मोबाईल : ९८६७६२४७४४

श्रीमती सोहिणी बी. परिख
बी/२३, शांति निकेतन,
लल्लुभाइ पार्क, अंधेरी (वेस्ट),
मुंबई - ४०००५८.
फोन : २६७०६३५०